वर्ष-11 अंक-33 पृष्ठ-8 मूल्यः 3 रुपये

प्रयागराज, मंगलवार 08 अप्रैल 2025

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित एवं सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रसारित

Download From Google Play

Adhunik Samachar

आधुनिक समाचार नेटवर्क

11 YEARS ANNIVERSARY

संक्षिप्त समाचार

गांव की जमीन पर वक्फ बोर्ड के दावे की जांच जारी रखेगा न्यायिक आयोग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। हाईकोर्ट ने अपने ताजा आदेश में साफ किया कि न्यायिक आयोग अगले आदेश तक अस्थायी तौर पर काम करता रहेगा। अपील पर आगे की सुनवाई गर्मी की छुट्टियों के बाद जून में होगी। मुनंबम जमीन विवाद के मामले में सोमवार को

केरल हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच ने सुनवाई की। उच्च न्यायालय ने इस दौरान एक जज की बेंच के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें मामले की जांच के लिए न्यायिक आयोग के गठन को रद्द कर दिया गया था। गौरतलब है कि इस मामले में न्यायिक आयोग के गठन का एलान खुद केरल सरकार ने किया था। हालांकि, हाईकोर्ट की एकल जज की पीठ ने 17 मार्च को इस न्यायिक आयोग की नियुक्ति को रद्द कर दिया। इसी मामले में सुनवाई करते हुए चीफ जस्टिस नितिन जामदार और जस्टिस एस. मनु की डिवीजन बेंच ने एक अंतरिम आदेश पारित किया और एकल पीठ के फैसले पर रोक लगा दी। हाईकोर्ट ने अपने ताजा आदेश में साफ किया कि न्यायिक आयोग अगले आदेश तक अस्थायी तौर पर काम करता रहेगा। अपील पर आगे की सुनवाई गर्मी की छुट्टियों के बाद जून में होगी। अदालत के आदेश को लेकर केरल के कानून मंत्री पी. राजीव ने कहा कि अब आयोग अपना कार्य कर सकता है और सरकार जरूरी प्रक्रियाओं के साथ आगे बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि एकल पीठ के आदेश की वजह से आयोग को अपना काम करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला। लेकिन अब यह आयोग अपना काम आगे बढ़ाएगा।

मतदान के दौरान वीवीपैट पर्चियों की 100% गिनती की याचिका खारिज, सुप्रीम कोर्ट ने की ये टिप्पणी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव के दौरान वीवीपैट पर्चियों की 100 फीसदी हाथों से गिनती को लेकर दायर याचिका को खारिज कर दिया है। इस दौरान शीर्ष अदालत ने कहा- हमें विवादित फैसले में हस्तक्षेप करने का कोई अच्छा आधार नहीं मिला। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को उस याचिका की सुनवाई करने से इनकार कर दिया, जिसमें चुनाव आयोग को इलेक्ट्रॉनिक गिनती के अलावा वोटर वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपीएटी) पर्चियों की 100 प्रतिशत हाथों से गिनती के लिए निर्देश देने की मांग की गई थी। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ इस मुद्दे पर दिल्ली उच्च न्यायालय के 12 अगस्त, 2024 के फैसले के खिलाफ हंस राज जैन की याचिका पर विचार कर रही थी। सीजेआई ने हंस राज जैन की अपील को खारिज करते हुए कहा, 'हमें (दिल्ली उच्च न्यायालय के) विवादित फैसले में हस्तक्षेप करने का कोई अच्छा आधार नहीं मिला। विशेष अनुमति याचिका खारिज की जाती है'। सीजेआई ने आगे कहा कि उनके नेतृत्व वाली शीर्ष अदालत की पीठ ने पहले भी इसी तरह के मुद्दे उठाते हुए एक फैसला सुनाया था और इसे बार-बार नहीं उठाया जा सकता।

बीड में धार्मिक स्थल पर विस्फोट मामले में बड़ी कार्रवाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के बीड जिले में 30 मार्च को एक मस्जिद में कथित तौर पर जिलेटिन की छड़ों से विस्फोट हो गया था। पुलिस के मुताबिक, इसे एक व्यक्ति ने धार्मिक स्थल में रखा था। जियोराई तहसील

के अर्धा मसला गांव में सुबह करीब 2.30 बजे विस्फोट हुआ। इसमें में कोई व्यक्ति घायल नहीं हुआ, लेकिन विस्फोट से ढांचे का अंदरूनी हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया था। विस्फोट के सिलसिले में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था। महाराष्ट्र के बीड जिले में एक मस्जिद में विस्फोट के मामले में बड़ा अपडेट सामने आया है। पुलिस ने मामले में गिरफ्तार दो व्यक्तियों के खिलाफ आतंकवादी कृत्य के लिए कठोर गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम और भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा लगाई है। ईद-उल-फितर से ऐन पहले जियोराई तहसील के अर्ध मसला गांव में मस्जिद में जिलेटिन की छड़ों के जरिए विस्फोट हुआ था। विस्फोट कथित तौर पर जुलूस के दौरान दो समूहों के बीच विवाद के बाद हुआ था। हालांकि, विस्फोट में कोई घायल नहीं हुआ, लेकिन ढांचे का आंतरिक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। पुलिस ने धमाके के कुछ घंटों के अंदर ही स्थानीय निवासी विजय राम गव्हाने (22) और अशोक सागड़े (24) को गिरफ्तार किया था। बीड पुलिस ने शुरू में बीएनएस की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया था, जिसमें 298 (धर्म का अपमान करने के इरादे से पूजा स्थल को नुकसान पहुंचाना या अपवित्र करना), 299 (धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के इरादे से जानबूझकर और दुर्भावनापूर्ण काम करना) और 196 (दो समुदायों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देना) शामिल हैं।एक अधिकारी ने कहा कि जांच के दौरान पुलिस ने अब बीएनएस धारा 113 (आतंकवादी कृत्य) और यूएपीए धारा 15, 16 और 18 को लागू किया है, जो आतंकवादी कृत्य, आतंकवादी घटना के लिए सजा और साजिश से संबंधित हैं। यूएपीए के तहत जमानत भी मुश्किल हो जाती है। गिरफ्तार किए गए लोग अब भी पुलिस हिरासत में हैं।घटना के बाद गांव के लोगों ने सद्भावना का परिचय दिया था। एक ग्रामीण ने बताया था कि गुड़ी पड़वा त्योहार के दौरान लोग धार्मिक स्थल के पास हजरत सैयद बादशाह दरगाह पर जाते हैं। रविवार की सुबह गुड़ी पड़वा और रमजान ईद का संयुक्त उत्सव मनाया जाना था। विस्फोट में धार्मिक स्थल के अंदर का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया, लेकिन दशकों से सद्भावनापूर्वक रह रहे स्थानीय लोगों ने इमारत की मरम्मत करने का फैसला किया। एक अन्य ग्रामीण ने बताया था कि क्षतिग्रस्त हिस्से की मरम्मत नई टाइलों से की गई। उन्होंने बताया था कि सुबह गांव में शांति समिति की बैठक भी हुई।

अनंत अंबानी की जामनगर से द्वारकाधीश मंदिर तक की पदयात्रा पूरी; द्वारकाधीश मंदिर पहुंचे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। हमारे देश में पदयात्रा करना एक बेहद ही पुरानी परंपरा रही है, जो ईश्वर से जुड़ने का एक आध्यात्मिक तरीका माना जाता है। इसी परंपरा को निभाते हुए रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के निदेशक अनंत अंबानी ने भी एक ऐसी ही धार्मिक यात्रा की है। उन्होंने कहा, 'मैं रामनवमी के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं देता हूं। मैंने द्वारकाधीश के दर्शन किए और इसके साथ ही मेरी पदयात्रा पूरी हुई रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के निदेशक अनंत अंबानी की जामनगर से द्वारकाधीश मंदिर तक की पदयात्रा आज पूरी हुई। वे रविवार को द्वारकाधीश मंदिर पहुंचे। अनंत अंबानी की मां और रिलायंस फाउंडेशन की संस्थापक-अध्यक्ष नीता अंबानी और उनकी पत्नी राधिका मर्चेंट आज उनके साथ शामिल हुईं।अनंत अंबानी ने कहा, 'यह मेरी धार्मिक यात्रा है। मैंने इस यात्रा की शुरुआत भगवान के नाम से की थी और उन्हीं के नाम से यात्रा का अंत करेंगे। मैं भगवान द्वारकाधीश का धन्यवाद करता हूं। मैं इस यात्रा में मेरे साथ शामिल होने वाले लोगों का भी धन्यवाद करता हूं।

मोबाइल-लैपटॉप से चिपकी रहने वाली किशोरियों में अनिद्रा और डिप्रेशन का खतरा, अध्ययन में खुलासा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। स्वीडन के एक अध्ययन में पाया गया कि किशोरों, विशेषकर लड़कियों, में अधिक स्क्रीन टाइम से नींद की समस्या और डिप्रेशन का खतरा बढ़ सकता है। शोध में यह भी पाया गया कि लड़कों में स्क्रीन टाइम से आक्रामक व्यवहार के लक्षण दिखाई देते हैं।मोबाइल, टैबलेट और कंप्यूटर स्क्रीन पर बहुत ज्यादा वक्त बिताना किशोरों, खासकर लड़कियों के लिए नुकसादायक साबित हो सकता है, क्योंकि यह उनकी नींद में खलल डालता है, और उनमें डिप्रेशन का खतरा बढ़ाता है। यह खुलासा स्वीडन के कैरोलिंस्का इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के प्लॉस ग्लोबल पब्लिक हेल्थ पत्रिका में प्रकाशित नए अध्ययन में हुआ है। पहले भी कई शोधों में देखा गया है कि स्क्रीन पर ज्यादा वक्त बिताना नींद और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, जैसे चिंता और डिप्रेशन से जुड़ा हुआ है। लेकिन अब तक ये साफ नहीं था कि नींद की दिक्कत डिप्रेशन लाती है, या डिप्रेशन नींद में खलल डालता है। इस सवाल का जवाब ढूंढने के लिए स्वीडन के करोलिंस्का इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने 12 से 16 साल के 4,810 छात्रों पर एक साल तक अध्ययन किया। उन्होंने छात्रों के स्क्रीन टाइम, नींद की गुणवत्ता और डिप्रेशन के लक्षणों का आकलन किया। शोध में देखा गया कि स्क्रीन पर अधिक वक्त बिताने से तीन महीनों के अंदर ही इन छात्रों की नींद में खलल पड़ने लगा था। इससे उनकी नींद का वक्त भी घटा और उसकी गुणवत्ता भी गिरी। बहुत से किशोर देर रात सोने लगे। शोधकर्ताओं ने बताया कि स्क्रीन टाइम से नींद की कई परतों पर एक साथ असर होता है। इसका असर लड़कियों में डिप्रेशन के रूप में दिखा, जबकि लड़के नींद की कमी के कारण बाहरी तौर पर अधिक आक्रामक हो गए थे। उनके व्यवहार में चिड़चिड़ापन या गुस्सा साफ दिखा। स्वीडन की सार्वजनिक स्वास्थ्य एजेंसी ने सितंबर 2024 में सलाह दी थी कि किशोरों को अपनी नींद में सुधार लाने के लिए फुर्सत के वक्त में रोजाना 2 से 3 घंटे से अधिक स्क्रीन का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। शोधकर्ताओं का मानना है कि ऐसे दिशा-निर्देशों से किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक असर पड़ सकता है।

राम मंदिर के बाहर लगी लंबी कतारें, सरयू पर चल रहा है पवित्र स्नान; 12 बजे होगा सूर्य तिलक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। सुबह से मंदिर परिसर में विविध कार्यक्रम शुरू हो गए हैं। सरयू घाट पर हजारों की भीड़ पवित्र डुबकी लगा चुकी है। ठीक 12 बजे सूर्य तिलक होना है। पवित्र सरयू में स्नान के साथ अयोध्या में रामनवमी पर्व के उत्सव का आगाज हो गया। सुबह से ही देश-विदेश से पहुंचे श्रद्धालु सरयू

में आस्था की डुबकी लगाने के लिए विभिन्न घाटों पर पहुंचने लगे हैं। घाटों पर भारी भीड़ है। जय श्री राम का उद्घोष लगाते हुए श्रद्धालु स्नान कर रहे हैं। सरयू स्नान के बाद श्रद्धालुओं का कारवां नागेश्वर नाथ, हनुमानगढ़ी, कनक भवन और राम मंदिर की ओर रवाना हो रहा है। सरयू के घाटों पर सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए गए हैं। जल पुलिस के साथ एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की तैनाती की गई है। राम मंदिर में दर्शन पूजन का दौर शुरू हो गया है। मंदिर परिसर के बाहर भक्तों की लंबी कतारें देखने को मिल रही हैं। राम मंदिर के साथ हनुमान गढ़ी में भी बड़ी संख्या में भक्त दिख रहे हैं। रामलला के दरबार में रामजन्मोत्सव की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। इस साल रामनवमी के दिन, जब रामलला का जन्मोत्सव मनाया जाएगा, ठीक उसी समय सूर्य तिलक भी होगा।

स्टार्टअप महाकुंभ में दिए बयान पर पीयूष गोयल को मिला इस सांसद का साथ; जेप्टो सीईओ पर कही यह बात

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। पीयूष गोयल की स्टार्टअप महाकुंभ में की गई टिप्पणियों पर जेप्टो सीईओ की प्रतिक्रिया लगातार चर्चा में है। इसी बीच भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने पीयूष गोयल की टिप्पणी का समर्थन करते हुए जेप्टो के सीईओ की प्रतिक्रिया को गलत बताया है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल की भारतीय स्टार्टअप्स को लेकर की गई टिप्पणी ने बाजार में बातचीत तेज कर दी है। इतना ही नहीं गोयल की टिप्पणी पर जेप्टो के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आदित पालीचा की प्रतिक्रिया लगातार चर्चा में है। हालांकि अब केंद्रीय मंत्री की टिप्पणी को भाजपा सांसदों का समर्थन मिल रहा है। भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने पीयूष गोयल की टिप्पणी को सही बताते हुए पालीचा के बयान को गलत और गैर-तार्किक बताया है।अखिल भारतीय व्यापारी परिसंघ (सीएआईटी) के महासचिव और सांसद खंडेलवाल ने कहा कि केंद्रीय मंत्री ने भारतीय स्टार्टअप्स के फोकस क्षेत्रों पर जो चिंताएं जताई हैं, वह सही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जेप्टो के सीईओ पालीचा ने रक्षात्मक होने के कारण गोयल की टिप्पणियों का सार समझने से चूक गए।प्रवीण खंडेलवाल ने जेप्टो को सीईओ के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि नौकरियां पैदा करने और करों का भुगतान करने का दावा करते हुए छोटे किराना स्टोरों को खत्म करने के लिए विदेशी पूंजी खर्च करना कोई नवाचार नहीं है। यह भारत के दीर्घकालिक हितों के खिलाफ है। साथ ही भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि यह केंद्रीय मंत्री के संदेश के सार को नकारता है। खंडेलवाल ने कहा कि नवाचार को राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए, न कि केवल सुविधा। हमें ऐसे स्टार्टअप्स की आवश्यकता है जो वास्तविक समस्याओं का समाधान करें और भारत के भविष्य को आगे बढ़ाने के लिए आधारभूत प्रौद्योगिकियों का निर्माण करें। बता दें कि केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने 'स्टार्टअप महाकुंभ' कार्यक्रम में भारतीय खाद्य वितरण स्टार्टअप्स पर सवाल उठाए थे। उन्होंने कहा था कि क्या हम डिलीवरी बॉय और गर्ल्स बनकर खुश रहेंगे? क्या यही भारत की भविष्यवाणी है? यह स्टार्टअप नहीं है, यह सिर्फ उद्यमिता है। साथ ही उन्होंने भारत बनाम चीनः स्टार्टअप रियलिटी चेक' शीर्षक वाली स्लाइड दिखाते हुए कहा था कि दूसरी ओर, रोबोटिक्स, मशीन लर्निंग, 3डी मैन्युफैक्चरिंग और अगली पीढ़ी की फैक्ट्रियां तेजी से बढ़ रही हैं पीयूष गोयल के बयान पर कई कंपनियों के सीईओ की प्रतिक्रिया आई। इसमें जेप्टो के सीएम आदित पालीचा भी शामिल थे। उन्होंने गोयल के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि अपनी कंपनी के योगदान पर जोर दिया, जिसमें 1.5 लाख नौकरियों का सृजन, 1,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का वार्षिक कर और 1 बिलियन डॉलर से अधिक का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) शामिल है।

वक्फ की संपत्तियों पर गैर-मुस्लिमों का भी अधिकार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने संसद में पारित वक्फ संशोधन बिल का समर्थन करते हुए कहा कि गैर-मुस्लिमों का भी वक्फ की संपत्तियों में बराबर का हक है। उन्होंने शनिवार को पटना में कहा कि वक्फ की संपत्तियां अल्लाह की मानी जाती हैं। इसका इस्तेमाल गरीबों, जरूरतमंदों और जनहित के लिए होना चाहिए।अपने दावे को लेकर उन्होंने कुरान का हवाला देते हुए कहा कि इसमें दो तरह के जरूरतमंदों फकीर (मुस्लिम) और मिस्कीन (गैर-मुस्लिम) का जिक्र है। इसका अर्थ है कि वक्फ से लाभान्वित होने का अधिकार हर जरूरतमंद को है। उन्होंने पटना में वक्फ की तमाम संपत्तियों के बावजूद उस पर कोई अस्पताल या अनाथालय न होने को लेकर भी सवाल उठाया। बिल को लेकर जारी विरोध पर उन्होंने यह भी कहा कि भारत लोकतांत्रिक देश है। हर किसी को अपनी बात रखने का अधिकार है।उधर, लखनऊ में ऑल इंडिया मुस्लिम महिला पर्सनल लॉ बोर्ड की अध्यक्ष शाइस्ता अंबर ने वक्फ बिल का समर्थन करते हुए कहा कि पिछली सरकारों और धार्मिक नेताओं को वह कदम उठाना चाहिए था जो अब सरकार ने उठाया है। उन्होंने सरकार से वक्फ बोर्ड के कामकाज में पारदर्शिता लाने और महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करने का आग्रह किया। इसी बीच, उत्तराखंड वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष शादाब शम्स ने कहा है कि संशोधन विधेयक का विरोध करने वाले गरीब मुसलमान नहीं, बल्कि राजनीतिक मुसलमान हैं। आम आदमी पार्टी विधायक अमानतुल्लाह खान ने वक्फ (संशोधन) विधेयक की सांविधानिक वैधता को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है। याचिका में कहा गया है कि यह विधेयक संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 21, 25, 26, 29, 30 और 300-ए के तहत निहित मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है और मुसलमानों की धार्मिक और सांस्कृतिक स्वायत्तता कम करता है। एक गैरसरकारी संगठन(एनजीओ) एपीसीआर ने भी शीर्ष कोर्ट में इसी तरह की याचिका दायर की है।

पीएम मोदी देश के पहले वर्टिकल लिफ्ट सी ब्रिज पंबन की देंगे सौगात

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज रामनवमी के मौके पर तमिलनाडु के रामेश्वरम में भारत

के पहले वर्टिकल लिफ्ट सी ब्रिज का उद्घाटन करेंगे। इस दौरान वे एक ट्रेन और जहाज को भी हरी झंडी दिखाई जाएगी। उद्घाटन के बाद पीएम 8,300 करोड़ रुपये की विभिन्न रेल और सड़क परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तमिलनाडु के रामेश्वरम में आज दोपहर भारत के पहले वर्टिकल लिफ्ट समुद्री ब्रिज पंबन का उद्घाटन करेंगे। इसके साथ ही वे राज्य में कई अन्य विकास परियोजनाओं की शुरुआत भी करेंगे। इस कार्यक्रम से पहले भारतीय रेल ने इस नए रेलवे ब्रिज का एक सुंदर वीडियो जारी किया है। रेलवे मंत्रालय ने कहा कि समुद्र के ऊपर बना यह रेलवे ब्रिज अतीत और भविष्य को जोड़ता है। इसे राम नवमी के दिन जनता के सामने पेश किया जाएगा और इस दौरान पीएम मोदी के वहां होने से रामेश्वरम में सुरक्षा बढ़ा दी गई है।दोपहर करीब 12 बजे प्रधानमंत्री नए पंबन रेलवे पुल को जनता को समर्पित करेंगे। वे रामेश्वरम से तांब्रम (चेन्नई) के बीच एक नई ट्रेन सेवा को भी हरी झंडी दिखाएंगे। साथ ही एक तटरक्षक जहाज को भी रवाना करेंगे। जैसे ही ब्रिज का वर्टिकल लिफ्ट हिस्सा ऊपर उठेगा, जहाज उसके नीचे से गुजरेगा और इस ब्रिज के परिचालन तकनीक का प्रदर्शन होगा। इसके बाद, लगभग 12:45 बजे पीएम रामेश्वरम के प्रसिद्ध रामनाथस्वामी मंदिर में दर्शन और पूजा करेंगे। फिर दोपहर करीब 1:30 बजे वे 8,300 करोड़ रुपये से अधिक की रेलवे और सड़क परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण करेंगे। इन परियोजनाओं में एनएच-40 के 28 किलोमीटर लंबे वालाजापेट-रानीपेट खंड को चार लेन का बनाने के कार्य का शिलान्यास और एनएच-332 के 29 किलोमीटर लंबे विलुप्पुरम-पुडुचेरी खंड को चार लेन का बनाने का काम, एनएच-32 का 57 किलोमीटर लंबा पूंडियनकुप्पम-सत्तनाथपुरम खंड और एनएच-36 का 48 किलोमीटर लंबा चोलापुरम-तंजावुर खंड शामिल हैं। ये सड़कें तीर्थ स्थलों, पर्यटन स्थलों, शहरों, मेडिकल कॉलेजों और बंदरगाहों को बेहतर ढंग से जोड़ेंगी। ये स्थानीय किसानों को बाजार तक पहुंचने में मदद करेंगी और चमड़ा व लघु उद्योगों को बढ़ावा देंगी। इस पंबन ब्रिज का सांस्कृतिक महत्व भी है। रामायण के अनुसार, भगवान राम की सेना ने राम सेतु का निर्माण रामेश्वरम के नजदीक धनुषकोडी से शुरू किया था। समुद्री माहौल से नुकसान और बढ़ते ट्रैफिक को देखते हुए सरकार ने फरवरी 2019 में नए तकनीकी और मजबूत पंबन ब्रिज के निर्माण की मंजूरी दी।

समान नागरिक संहिता के लिए संसद और विधानसभाएं ठोस प्रयास करें' हाईकोर्ट ने बताया ये क्यों जरूरी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। हाईकोर्ट ने कहा कि गोवा और उत्तराखंड जैसे राज्यों ने पहले ही समान नागरिक संहिता लागू करने की दिशा में कदम उठा

लिए हैं। अदालत ने रजिस्ट्रार जनरल को निर्देश दिया कि वह उसके निर्णय की एक प्रति केंद्र सरकार और कर्नाटक सरकार के प्रधान विधि सचिवों को भेजें, ताकि ऐसी संहिता लागू करने की दिशा में विधायी प्रयास शुरू किए जा सकें। कर्नाटक हाईकोर्ट ने संसद और राज्य विधानसभाओं से समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के लिए ठोस प्रयास करने का आग्रह किया है। अदालत ने कहा कि सभी नागरिकों, खासतौर पर महिलाओं के लिए समानता, धर्मनिरपेक्षता और न्याय के सांविधानिक दृष्टिकोण के नजरिये से यह महत्वपूर्ण है। जस्टिस एच संजीव कुमार की एकल पीठ ने एक मृतक मुस्लिम महिला शहनाज बेगम के पति और भाई-बहन के बीच संपत्ति विवाद से संबंधित एक सिविल अपील पर फैसला सुनाते हुए यह सिफारिश की। इस मामले ने पर्सनल धार्मिक विधानों की ओर से संचालित उत्तराधिकार कानूनों और लैंगिक न्याय पर उनके प्रभाव के बारे में व्यापक प्रश्न उठाए हैं। जस्टिस कुमार ने कहा कि जैसा कि संविधान के अनुच्छेद 44 के अंतर्गत कल्पना की गई है, समान नागरिक संहिता को लागू करने से संविधान के प्रस्तावना में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और राष्ट्रीय एकता के आदर्शों को पूरा किया जा सकेगा हाईकोर्ट ने 4 अप्रैल के अपने फैसले में कहा, देश को पर्सनल लॉ और धर्म के संबंध में एक समान नागरिक संहिता की जरूरत है, तभी भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 का उद्देश्य प्राप्त होगा।

दिल्ली पुलिस के एक और पिट में लगी भीषण आग, चपेट में आई 345 गाड़ियां; 260 स्कूटी और बाइक जली

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। आग की चपेट में आकर 345 गाड़ियां जल गई।

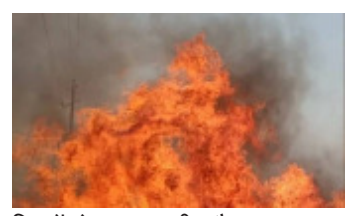

जिनमें से 260 स्कूटी और बाइक बाकी 85 कार शामिल है। राहत की बात यह रही कि इसमें कोई हताहत या घायल नहीं हुआ। राजधानी दिल्ली में गर्मी के बीच आग लगने का सिलसिला लगातार जारी है। नेहरू प्लेस स्थित ट्रैफिक पुलिस की पिट के अब वजीराबाद के पास दिल्ली पुलिस के पिट का है। जहां आग लगने का बड़ा हादसा हुआ। जिसमें काफी संख्या में गाड़ियां जलकर खाक हो गई। फायर कंट्रोल रूम को 4:30 बजे के आसपास आग लगने की सूचना मिली थी। मौके पर अलग-अलग फायर स्टेशन से आग बुझाने वाली सात गाड़ियां पहुंची और 2 घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।फायर डायरेक्टर अतुल गर्ग ने बताया कि आग बुझाने के बाद फिर कर्मियों की टीम ने लगातार कूलिंग का काम किया।

प्रयागराज से अयोध्या-काशी तक विश्व कल्याण के लिए चंडी होमम्, सर्वमंगल के लिए शुरू हुआ अनुष्ठान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। वासंतिक नवरात्र में संगम तट से विश्व कल्याण के लिए चंडी होम अनुष्ठान कर सर्व मंगल की कामना की गई। यह अनुष्ठान तीन प्रमुख आध्यात्मिक तीर्थों में होगा। प्रयागराज के बाद रविवार को अयोध्या और सोमवार को काशी में चंडी होम होगा। वासंतिक नवरात्र में संगम तट से विश्व कल्याण के लिए चंडी होम अनुष्ठान कर सर्व मंगल की कामना की गई। यह अनुष्ठान तीन प्रमुख आध्यात्मिक तीर्थों में होगा। प्रयागराज के बाद रविवार को अयोध्या और सोमवार को काशी में चंडी होम होगा। 10 अप्रैल को नेपाल के काठमांडो स्थित पशुपति नाथ मंदिर में महायज्ञ की पूर्णाहुति होगी। कोयंबटूर के द्रोपदी महापीठम के प्रमुख आचार्य स्वामी रामानुजन के आचार्यत्व में संगम स्थित शंकर विमान मंडपम में कांचीकामकोटि पीठ के आचार्यों ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ मां चंडी का दरबार सजाया।देवी के विविध रूपों की धूप, दीप, नैवेद्य के साथ स्थापना कर चंडी होम किया गया। रविवार की सुबह चंडी होम अनुष्ठान की पूर्णाहुति होगी। शाम को अयोध्या में चंडी होम कराया जाएगा। सोमवार को दक्षिण भारतीय आचार्यों की ओर से काशी में महायज्ञ होगा। इसके बाद नेपाल के काठमांडो में विशेष पूजन कर विश्व शांति और कल्याण की कामना की जाएगी। स्वामी रामानुजन ने बताया कि मां भगवती से इस अनुष्ठान के जरिए व्यष्टि से लेकर समष्टि तक सबके कल्याण और सुख-शांति की कामना की जाएगी। इस महायज्ञ परिसर में कांचीकामकोटि पीठ के ब्रह्मलीन शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती की प्रतिमा भी स्थापित की गई थी।

कमांडर वर्क इंजीनियर की हत्या के मामले की विवेचना अब एसआईटी के हवाले, आईजी के नेतृत्व में कमेटी गठित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। एयरफोर्स के कमांडर वर्क इंजीनीयर की 29 मार्च को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले का खुलासा पुलिस ने कर दिया था, लेकिन परिजनों ने खुलासे पर सवाल खड़ा किए थे। शासन को पत्र भेजकर गहराई से जांच कराने की मांग की थी। पत्नी वत्सला ने हत्या के पीछे गहरी साजिश की आशंका जताई थी। डीजीपी ने आईजी रेंज प्रयागराज के नेतृत्व में तीन सदस्यीय टीम को खुलासे लिए लगा दिया है। वायुसेना परिसर में हुए कमांडर वर्क इंजीनियर सत्येंद्र नारायण मिश्र हत्याकांड की विवेचना अब विशेष जांच दल(एसआईटी) की निगरानी में होगी। डीजीपी की ओर से तीन सदस्यीय एसआईटी गठित कर दी गई है। आईजी रेंज प्रेम कुमार गौतम की अध्यक्षता में गठित इस टीम में प्रयागराज के अपर पुलिस आयुक्त अपराध डॉ. अजयपाल शर्मा व एसीपी धूमनगंज बृजेंद्र यादव भी शामिल किए गए हैं।परिजनों ने दो दिन पहले इस मामले में पुलिस विभाग के आला अफसरों को पत्र भेजकर मामले की जांच निजी एजेंसी या एसआईटी से जांच कराने की मांग की थी। उन्होंने पुलिस की खुलासे की थ्योरी पर सवाल उठाए थे। इसके बाद ही डीजीपी की ओर से मामले की विवेचना के लिए एसआईटी गठित करने का निर्णय लिया गया।एसआईटी ने रविवार को काम शुरू भी कर दिया। तीनों अफसरों ने विवेचक पूरामुफ्ती थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह को बुलाकर केस के संबंध में पूछताछ की। विवेचना की अब तक की प्रगति के बारे में भी जानकारी हासिल की। माना जा रहा है कि जल्द ही इस मामले में एसआईटी एयरफोर्स कैंपस स्थित घटनास्थल का निरीक्षण करने के साथ मृतक अफसर की पत्नी व बेटे से भी बात कर सकती है। अपर पुलिस आयुक्त, अपराध डॉ. अजयपाल शर्मा ने बताया कि एसआईटी विवेचना की निगरानी करेगी। साथ ही यह सुनिश्चित करेगी कि घटना से संबंधित सभी पहलुओं पर व्यापक पड़ताल कर साक्ष्य जुटाए जाएं और इन्हें विवेचना में शामिल किया जाए। मध्य वायु कमान कैंपस के भीतर कमांडर वर्क इंजीनियर सत्येंद्र नारायण मिश्रा की 29 मार्च को भोर में 3.15 बजे गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। चार अप्रैल को पुलिस ने मामले का खुलासा करने का दावा किया था। पुलिस ने दावा किया कि सैन्य कॉलोनी में चोरी की नीयत से घुसे चोर ने सैन्य अधिकारी के जाग जाने पर उन्हें गोली मार दी थी, जिससे उनकी मौत हो गई थी। कमांडर वर्क इंजीनियर की पत्नी वत्सला मिश्रा ने मीडिया को जारी बयान में कहा है कि वायु सेना स्टेशन बमरौली के आधिकारिक आवास में 29 मार्च की सुबह लगभग 3:15 बजे उनके पति की हत्या कर दी गई, जबकि यह अत्यधिक सुरक्षित सैन्य क्षेत्र का हिस्सा है। इससे पहले 14 मार्च की रात भी घुसपैठ की कोशिश की गई थी। इसके बाद उनके पति ने वायु सेना के अधिकारियों को सतर्क करते हुए अपनी सुरक्षा की चिंता जताई थी। औपचारिक रूप से सुरक्षा बढ़ाने का अनुरोध भी किया था। पुलिस ने जो दावा किया है उसमें सच्चाई नहीं है। हत्या के पीछे गहरी साजिश है।

सिकंदरा में गाजी मियां की दरगाह पर लहराया भगवा झंडा, वीडियो वायरल; पुलिस बोली- होगी कार्रवाई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। प्रदर्शन का वीडियो वायरल होने पर एसीपी फूलपुर पंकज लवानिया, थाना अध्यक्ष बहरिया महेश मिश्रा भारी फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। कस्बे में फ्लैग मार्च किया और शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की। सिकंदरा स्थित सालार मसूद गाजी मियां की दरगाह पर महाराजा सुहेलदेव सुरक्षा सम्मान मंच के कार्यकर्ताओं ने रविवार को भगवा झंडा फहरा दिया। परिसर में काफी देर तक विरोध प्रदर्शन कर दरगाह को हटाने की मांग की। इसका वीडियो वायरल होने पर पुलिस मौके पर पहुंची। लेकिन तब प्रदर्शनकारी जा चुके थे। एसीपी पंकज लवानिया ने कहा कि जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। बहरिया ब्लॉक के सिकंदरा कस्बा स्थित गाजी मियां की दरगाह पर प्रत्येक रविवार और बुधवार को रौजा मेला लगता है, जिसमें हिंदू और मुसलमान पहुंचते हैं। विवाद 23 मार्च को शुरू हुआ, जब दरगाह पर रौजा मेला कमेटी के अध्यक्ष सफदर जावेद की ओर से पुलिस ने ताला लगवा दिया था। हालांकि, शाम को जावेद ने बयान जारी किया कि मरम्मत कार्य की वजह से ताला लगाया गया है। दूसरे दिन 24 मार्च को ताला खोल दिया गया लेकिन सन्नाटा रहा। इसके बाद कुछ लोग पहुंचते रहे। लेकिन 30 मार्च को मेले वाले दिन फिर बैरिकेडिंग कर दी गई। पुलिसकर्मी तैनात रहे और मेला नहीं लगा। रविवार को महाराजा सुहेलदेव सम्मान सुरक्षा मंच के कार्यकर्ता मानेंद्र प्रताप सिंह के नेतृत्व में भगवा झंडा लेकर दरगाह पर पहुंचे और नारेबाजी शुरू कर दी। कुछ कार्यकर्ता दरगाह के मुख्य द्वार के गुंबद पर चढ़कर झंडा लहराने लगे। इससे अफरातफरी मच गई। प्रदर्शन के दौरान वहां कोई सुरक्षाकर्मी नजर नहीं आया। न ही स्थानीय लोगों ने इसका विरोध किया।प्रदर्शन का वीडियो वायरल होने पर एसीपी फूलपुर पंकज लवानिया, थाना अध्यक्ष बहरिया महेश मिश्रा भारी फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। कस्बे में फ्लैग मार्च किया और शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की। हालांकि, अमर उजाला वीडियो की पुष्टि नहीं करता लेकिन सुहेलदेव सम्मान सुरक्षा मंच के कार्यकर्ता मानेंद्र प्रताप से बात की गई तो उन्होंने बताया कि झंडा उनके संगठन की ओर से फहराया गया है। दरगाह पर जो हुआ, गलत है मेला कमेटी के अध्यक्ष सफदर जावेद ने कहा कि दरगाह पर चढ़कर झंडा फहराना गलत है। हमने अभी कोई तहरीर नहीं दी है, न ही मांगी गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस-प्रशासन जो कार्रवाई करेगा, उसमें मेरा सहयोग रहेगा।

योगी सरकार लाएगी नया अधिनियम, जल्द मिलेगी घरौनी में संशोधन की सुविधा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

लखनऊ। यूपी की योगी सरकार जल्द ही एक नया अधिनियम लाएगी। इससे लोगों को घरौनी में संशोधन की सुविधा मिल सकेगी। प्रमाणपत्र मिलने के छह महीने के अंदर आपत्ति दर्ज करा सकेंगे। आगे पढ़ें और जानें पूरी जानकारी उत्तर प्रदेश में लोगों को घरौनी में संशोधन कराने की सुविधा जल्द मिलेगी। योगी सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में आबादी के सर्वे और मालिकाना हक के लिए विधेयक लाने जा रही है। प्रस्तावित प्रारूप के अनुसार, घरौनी का प्रमाणपत्र मिलने के छह माह के भीतर संबंधित पक्ष उस पर आपत्ति कर सकेगा। इसकी सुनवाई सहायक रिकॉर्ड ऑफिसर (एआरओ) करेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में आबादी वाले हिस्सों पर मालिकाना हक पहले राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज नहीं था। इससे विवाद की स्थिति में दिक्कतें होती थीं। घर बनाने के लिए बैंकों से लोन भी नहीं मिल पाता था। इससे निपटने के लिए प्रदेश सरकार ने 8 अक्तूबर 2020 को ग्रामीण क्षेत्रों में आबादी का सर्वे और घरौनी प्रबंध नियमावली की अधिसूचना जारी की।

यूपीपीएससी की भर्ती परीक्षाओं में आर्टिफिशियल इंटेजिलेंस आधारित सीसीटीवी कैमरों का होगा इस्तेमाल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा-2024 में शामिल अभ्यर्थियों की हर एक गतिविधि पर उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) की पैनी नजर थी। 22 दिसंबर 2024 को प्रदेश के 75 जिलों के 1331 केंद्रों में आयोजित इस परीक्षा में आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस (एआई) के सफल प्रयोग के बाद आयोग अपनी अन्य परीक्षाओं में भी इस तकनीक का इस्तेमाल करने जा रहा है। पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा-2024 में शामिल अभ्यर्थियों की हर एक गतिविधि पर उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) की पैनी नजर थी। 22 दिसंबर 2024 को प्रदेश के 75 जिलों के 1331 केंद्रों में आयोजित इस परीक्षा में आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस (एआई) के सफल प्रयोग के बाद आयोग अपनी अन्य परीक्षाओं में भी इस तकनीक का इस्तेमाल करने जा रहा है केंद्र निर्धारण नीति के नियम सख्त होने के कारण आयोग ने अब सभी 75 जिलों में परीक्षा करानी पड़ रही है और हर जगह आयोग के प्रतिनिधियों का पहुंच पाना संभव नहीं है। यही वजह है कि आयोग ने अपनी परीक्षाओं में गड़बड़ी को रोकने के लिए एआई की मदद ली है। एआई आधारित कैमरे हर परीक्षा केंद्र में प्रत्येक अभ्यर्थी की गतिविधियों पर पैनी नजर रख सकेंगे। एआई आधारित सीसीटीवी कैमरे अभ्यर्थियों के पल-पल की गतिविधियों पर नजर रखेंगे। अगर अभ्यर्थी अपने अगल-बगल या आगे-पीछे बैठे किसी अन्य अभ्यर्थी से खुसुर-फुसुर भी करता है तो एआई आधारित कैमरे उसकी इस गतिविधि को संदिग्ध मानते हुए उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग में बने कंट्रोल रूम तक संदेश पहुंचा देंगे।

पटाखा बनाते समय भीषण विस्फोट पलक झपकते ही उड़ गया गोदाम; मलबे में दबकर कारीगर गंभीर घायल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

लखनऊ। लखनऊ में पटाखा बनाते समय भीषण विस्फोट हो गया। घटना से पलक झपकते ही पूरा गोदाम उड़ गया। मलबे में दबकर कारीगर गंभीर रूप से घायल हो गया। धमाके की आवाज सुनकर पहुंचे लोगों ने घायल को अस्पताल पहुंचाया। राजधानी लखनऊ में सोमवार को पटाखा बनाते समय विस्फोट हो गया। हादसे में गोदाम की दीवारें उड़ गईं। कारीगर मलबे में दबकर गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर पहुंचे लोगों ने उसे आनन-फानन अस्पताल पहुंचाया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण करके जानकारी ली। आगे की कार्रवाई की जा रही है।घटना गोसाईगंज क्षेत्र के जौखंडी गांव की है। यहां गांव के बाहर बने पटाखा गोदाम में दोपहर करीब 12.30 बजे गांव निवासी सलमान पटाखा बना रहा था। इसी बीच एक पटाखा हाथ से नीचे गिर गया। इससे भीषण विस्फोट हो गया। गोदाम किसी फिल्म की सीन की तरह उड़ गया। धमाके की गूंज गांव तक पहुंची। आवाज सुन लोग मौके की तरफ भागे। ग्रामीण गोदाम के पास पहुंचे तो उन्हें सलमान के चीखने की आवाज सुनाई पड़ी। लोगों ने किसी तरह उसे बाहर निकाला। हादसे में उसका एक पैर टूट गया है। अस्पताल में इलाज चल रहा है। सूचना पर दमकल कर्मी और पुलिस पहुंच गई। इंस्पेक्टर ब्रजेश त्रिपाठी ने बताया कि सलमान का इलाज चल रहा है। पटाखा गोदाम सलमान के भाई निसार का था। उनके पास लाइसेंस है। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है
श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

प्रदेश आस/पास

भारत

राष्ट्रीय लोक अदालत 10 मई को सफल बनाये जाने हेतु बैठक संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली। 30प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशानुसार व अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/जनपद न्यायाधीश राजकुमार सिंह के दिशा-निर्देशन में 10 मई 2025 को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाना है। राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने हेतु शुक्रवार को बैंक व फाइनेन्स कम्पनियों के लम्बित प्री-लिटिगेशन स्तर के मामलों के अधिक से अधिक निस्तारण की रुप-रेखा तय किये जाने हेतु बैठक जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आहूत की गयी। इस बैठक की अध्यक्षता अपर जिला जज अनुपम शौर्य के द्वारा की गयी। अपर जिला जज द्वारा बैठक में उपस्थित बैंक व फाइनेन्स कम्पनी के प्रबन्धकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये जिससे अधिक से अधिक मामलों के निस्तारण कर राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाया जा सके। बैठक में अग्रणी जिला प्रबन्धक, बैंक आफ बड़ौदा अमेठी राजीव पाण्डेय, अग्रणी जिला प्रबन्धक रुपेश दुबे, आरती निगम सहायक अग्रणी जिला प्रबन्धक, बैंक आफ बड़ौदा रायबरेली के अतिरिक्त शाखा प्रबन्धक बैंक आफ बडौदा, भारतीय स्टेट बैंक, इण्डियन बैंक, यूनियन बैंक आफ इण्डिया, इण्डियन बैंक, यूको बैंक, बड़ौदा यू0पी0 बैंक, श्रीराम फाइनेन्स, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक आफ इण्डिया, सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, आर0बी0एल0 बैंक, यूको बैंक, बन्धन बैंक व सोनाटा फाइनेन्स के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

डीएम-एसपी ने प्राथमिक विद्यालय गोरा बाजार का किया औचक निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर व पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह द्वारा प्राथमिक विद्यालय गोरा बाजार का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने विद्यालय की साफ-सफाई, मिड-डे-मील और बच्चों की उपस्थिति व अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने विद्यालय में कुल नामांकित बच्चों सहित वर्तमान शैक्षिक सत्र में अब तक नवीन नामांकन की स्थिति के बारे में भी जानकारी ली। जिलाधिकारी ने विद्यालय में स्थित रसोई घर का भी निरीक्षण किया तथा मध्यान भोजन मेनू के अनुसार गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने अध्यापकों को समय से विद्यालय में उपस्थित होकर बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा देने के निर्देश दिए, साथ ही उन्होंने मानक के अनुसार मिड-डे-मील की गुणवत्ता सुनिश्चित कराने के भी निर्देश दिए जिससे बच्चों को पौष्टिक भोजन मिल सके।

सांसद वीरेंद्र सिंह का आरोप- वाराणसी में नहीं हो रही दिशा की बैठक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
वाराणसी। समाजवादी पार्टी के सांसद वीरेंद्र सिंह ने भाजपा कार्यकर्ताओं पर कई गंभीर आरोप लगाए। कहा कि पीएम के संसदीय क्षेत्र में विकास कार्यों की समीक्षा नहीं हो रही है। मनरेगा मजदूरी पर भी उन्होंने सवाल उठाए हैं। चंदौली के सपा सांसद वीरेंद्र सिंह ने कहा कि पीएम के संसदीय क्षेत्र में दिशा की बैठक नहीं हो रही है। टैगोर टाउन स्थित आवास में पत्रकारों से कहा कि लगातार प्रयास के बावजूद आज लगभग 8-9 महीने बीत गए और केंद्र सरकार के द्वारा बनाए गए नियम जिसमें साल में 4 बार दिशा कमेटी की बैठक होनी चाहिए।आज करीब 8-9 महीने बीत जाने के बाद भी दिशा कमेटी की एक भी बैठक नहीं हो सकी। दिशा कमेटी एक ऐसी कमेटी होती है, जिसके माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा जो योजनाएं चलाई जाती हैं, उनकी समीक्षा की जाती है, ताकि योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों तक पहुंच सके।यह भी तय किया जाता है कि संबंधित अधिकारी जनहित में काम कर रहे है अथवा नहीं। उनकी जवाबदेही सुनिश्चित की जाती है। विशेष रूप से मनरेगा में जो मजदूर हैं, उनको भुगतान सही से मिल रहा हैं या नहीं?कहा कि प्रधानमंत्री आवास और चिकित्सा व्यवस्था से लेकर वह तमाम योजनाएं, जैसे प्रधानमंत्री ने कई गांव गोद लिए गए हैं। उस गांव की अद्यतन स्थिति क्या हैं? गोद लिए गए गांव की स्थिति सुधरी है कि नहीं, ये जनता के सामने आ जाए। वाराणसी में दिशा कमेटी की बैठक का न होना, अन्य जनपदों के लिए सही संदेश नहीं हो सकता है। इस संदर्भ में कई बार प्रधानमंत्री, ग्रामीण विकास मंत्री सहित आयुक्त, वाराणसी मंडल और जिलाधिकारी, वाराणसी को लिख चुका हूं। परंतु इसका अभी तक कोई निष्कर्ष नहीं निकल पाया है। सांसद ने कहा कि क्या वाराणसी की जनता को केंद्र सरकार द्वारा लागू योजनाओं के बारे में जानने का अधिकार भी नहीं है? क्षेत्र में भ्रमण के दौरान ग्रामीण जनता की कई छोटे-छोटे कार्यों के संबंध में मांग होती है, जिसका तत्काल समाधान किया जाना आवश्यक भी होता है। हम उन कार्यों को प्रस्तावित भी करते हैं और उन एजेंसियों को कार्य आवंटित करते हैं, जो उन कार्यों को तत्काल पूर्ण कर दे, अन्यथा कार्य में देरी होने से जनता और नाराज होती है। इसके लिए भी कई बार संबंधित अधिकारी को बताया गया। संभवतः अधिकारी मेरी पीड़ा को समझेंगे और आवश्यक निर्देश जारी करेंगे यह भी बताना है कि उत्तर प्रदेश में शराब नीति का उलंघन करते हुए गरीब समाज खासकर बिंद, बियार, मल्लाह, आदिवासी, वनवासी एवं अनुसूचित जातियों के बस्तियों के बीच देसी शराब ठेका खोलने का लाइसेंस दिया जा रहा हैं। उन्होंने आरोप लगाया- यदि आप पता करेंगे तो जनपद चंदौली के ऐसे सभी ग्रामसभाओं के शराब ठेके के मालिक भारतीय जनता पार्टी के सक्रीय कार्यकर्ता है और उनके पीछे जो शक्तियां हैं, वह शराब से जुड़े बड़े-बड़े माफिया हैं। इनका उपयोग 2027 के विधानसभा चुनाव एवं आगामी पंचायत चुनाव में शराब बांटकर वोट लूटने व उनका वोट प्रभावित करने की मंशा हैं।

बेटी की शादी के एक महीने बाद इंस्पेक्टर ने खुद को मारी गोली, सितंबर में हुए थे निलंबित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
वाराणसी। म्योर रोड स्थित अपने आवास में वाराणसी कमिश्नरेट में तैनात इंस्पेक्टर तरुण कुमार पांडेय ने बीते रविवार शाम गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। उन्होंने लाइसेंसी राइफल से घटना को अंजाम दिया। शाम छह बजे म्योर रोड स्थित अपने आवास में मारी गोली, गले को चीरती हुई सिर के आरपार हुई गोली, अपने लाइसेंसी राइफल से दो राउंड किए फायर, पहला मिस हुआ म्योर रोड स्थित अपने आवास में वाराणसी कमिश्नरेट में तैनात इंस्पेक्टर तरुण कुमार पांडेय (52) ने रविवार शाम गोली मारकर आत्महत्या कर ली। उन्होंने लाइसेंसी राइफल से घटना को अंजाम दिया। गोली गले को चीरती हुई सिर के आरपार हो गई। पुलिस को आशंका है कि रीढ़ की हड्डी टूटने की बीमारी से तंग आकर उन्होंने घटना को अंजाम दिया है। हालांकि, मौके से सुसाइड नोट नहीं मिला है। मूलरूप से गोंडा जनपद थाना नवाबगंज स्थित गांव बैजलपुर निवासी तरुण कुमार पांडेय की तैनाती वाराणसी में क्राइम ब्रांच की विवेचना शाखा में थी। लेकिन वह लगातार गैरहाजिर रहे। इनका म्योर रोड में 33ए/5ए में मकान हैं। पिछले कई माह से पत्नी पूनम पांडेय और बेटा इशान पांडेय बंगलूरू में रहते हैं। जबकि बेटी आशू पांडेय की एक मार्च 2025 को लखनऊ से शादी किया था।

तैनात इंस्पेक्टर तरुण कुमार पांडेय ने बीते रविवार शाम गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। उन्होंने लाइसेंसी राइफल से घटना को अंजाम दिया। शाम छह बजे म्योर रोड स्थित अपने आवास में मारी गोली, गले को चीरती हुई सिर के आरपार हुई गोली, अपने लाइसेंसी राइफल से दो राउंड किए फायर,

संचारी रोग नियन्त्रण अभियान अन्तर्गत कार्य कर रही सफाई कर्मचारियों की टीमों का किया गया स्थलीय निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर के निर्देशानुसार विकास खण्ड-लालगंज की ग्राम पंचायत युसुफपुर, विशुनखेड़ा एवं उत्तरागौरी में पंचायती राज विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा संयुक्त रूप से संचारी रोग नियन्त्रण अभियान अन्तर्गत कार्य कर रही सफाई कर्मचारियों की टीमों का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिला पंचायत राज अधिकारी सौम्य शील सिंह, जिला मलेरिया अधिकारी डॉ0 डी0एस0 अस्थाना एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र से डॉ0 अमन पटेल, सहायक विकास अधिकारी (पं0) लालगंज प्रणवीर प्रताप सिंह एवं सहायक विकास अधिकारी (पं0) खीरो अनिल कुमार वर्मा उपस्थित रहे। जिलाधिकारी के निर्देशन पर पूर्व में चलाये गये अभियान ठअपनी रायबरेली रमणीय रायबरेलीठ स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान अनुपस्थित पाए गये सफाई कर्मचारियों के विरूद्ध की गई कठोर कार्यवाही के परिणाम स्वरूप औचक निरीक्षण के दौरान तीनों ग्रामों में टीमों में लगाये गये समस्त सफाई कर्मचारी उपस्थित एवं कार्य करते हुए पाए गये। डॉक्टर द्वारा ग्राम पंचायत उत्तरागौरी में पीने के पानी की जाँच कराई गई जिसमें फ्लोराईड की अधिकता पायी गई जिस पर जिला पंचायत राज अधिकारी द्वारा सहायक विकास अधिकारी (पं0) लालगंज को निर्देशित किया गया कि केन्द्रीय वित्त के टाईड फण्ड से आर0ओ0 प्लान्ट लगवाये, जिससे ग्रामीणों को पीने का शुद्ध पानी प्राप्त हो सके।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मैहर जिले को दी 71 करोड के विकास कार्यों की सौगात

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मैहर। रामनवमी के दिन 6 अप्रैल को मैहर जिले के प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जिले को 70 करोड 99 लाख 84 हजार रूपये लागत के विकास कार्यों की सौगात दी।मुख्यमंत्री डॉ. यादव नवरात्रि के अवसर पर मैहर में मां शारदा देवी के दर्शन-पूजन के उपरांत प्रदेश को और प्रदेशवासियों के जीवन की मनोकामना की तत्पश्चात सुसज्जित जिप्सी में सवार होकर कटनी मोड स्टेट बैंक चौराहा होते हुए कटरा बाजार से घंटाघर मैं अभिनंदन यात्रा को समापन किया इसके बाद बंधा बैरियर में आयोजित आमसभा को संबोधित किया । मुख्यमंत्री डॉ. यादव यहां मैहर जिले के 71 करेड रूपये लागत के विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। इन 52 कार्यों में 43 करोड 16 लाख 49 हजार रूपये के 38 विकास निर्माण कार्यों का भूमिपूजन और 27 करोड 83 लाख 35 हजार रूपये लागत के 14 विकास कार्यों का लोकार्पण शामिल है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि मैहर जिले में वर्गी नहर का पानी 2025 में कैलेंडर बदलने के पहले पहुंचा दिया जाएगा। मैहर में बड़ा गौशाला को अभ्यारण के रूप में बनाया जाएगा। कलेक्ट्रेट भवन बनाने की घोषणा जल्द ही बनेगा संयुक्त कलेक्ट्रेट भवन इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री मती राधा सिंह,राज्य मंत्री प्रतिमा बागरी,सांसद गणेश सिंह,विधायक मैहर श्रीकांत चतुर्वेदी,रामपुर बघेलान विक्रम सिंह,चित्रकूट सुरेंद्र सिंह गहरवार जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल,नगरपालिका अध्यक्ष गीता संतोष सोनी जिला अध्यक्ष कमलेश सुहाने भी उपस्थित रहे।

तहसील लालगंज में जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली। लाधिकारी हर्षिता माथुर की अध्यक्षता में तहसील लालगंज में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि जनसामान्य की शिकायतों का स्थानीय स्तर पर समाधान किया जाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है जिसके क्रम में तहसील व थानों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है। इसमें स्थानीय नागरिक उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते है। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी जनता की इन शिकायतों का निस्तारण त्वरित एवं समयबद्ध तरीके से एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में यदि कोई समस्या है तो उसका कारण स्पष्ट करते हुए अवगत कराना सुनिश्चित किया जाये। जिलाधिकारी ने बताया कि तहसील लालगंज में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 87 प्रकरण प्राप्त हुये, जिसमें से 06 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष प्रकरणों को निस्तारण हेतु सम्बन्धित विभागों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करा दिये गये कि उनका निस्तारण एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित कराए। पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह ने भी पुलिस से संबंधित मामलों को सुना और संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।इस मौके पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ नवीन चंद्रा, एसडीएम लालगंज मिथिलेश कुमार त्रिपाठी सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

निषाद पार्टी के कार्यकर्ताओं ने धूमधाम से मनाई महर्षि कश्यप ऋषि की जयंती

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
चोपन सोनभद्र। निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय निषाद के निर्देशानुसार पूरे प्रदेश में महर्षि कश्यप ऋषि की जयंती बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई जा रही है। इसी क्रम में शनिवार को चोपन स्थित निषाद पार्टी के क्षेत्रीय कार्यालय में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष श्री अनिकेत निषाद ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश महासचिव श्री दयाशंकर निषाद उपस्थित रहे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ताओं और समाज के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत महर्षि कश्यप के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ की गई। वक्ताओं ने महर्षि कश्यप के योगदान और उनके समाज सुधारक रूप पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि कश्यप न केवल एक महान ऋषि थे, बल्कि उन्होंने समाज को एक सूत्र में बांधने का कार्य भी किया। मुख्य अतिथि दयाशंकर निषाद ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि कश्यप की जयंती मनाना हमारे गौरवशाली इतिहास को स्मरण करने का एक अवसर है। हमें उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारते हुए समाज के विकास में भागीदारी निभानी चाहिए। कार्यक्रम के अंत में सभी कार्यकर्ताओं ने संगठन को मजबूत करने और सामाजिक एकता बनाए रखने का संकल्प लिया। इस मौके पर जिला महासचिव फूलचंद चौधरी, संतोष साहनी, राजनारायण निषाद, अनिल निषाद, उदय निषाद, छोटेलाल निषाद, रामसनेही निषाद, मुनेश साहनी, विकास निषाद इत्यादि लोग मौजूद रहे।

रात में गश्त से रहते थे गायब सीपी ने लिया एक्शन; क्राइम मीटिंग में फटकारा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
वाराणसी। क्राइम मीटिंग के दौरान सीपी ने सख्त एक्शन लिया है। इसके साथ ही लापरवाही पुलिसकर्मियों को फटकार भी लगाई। उन्होंने कहा कि शहर में अपराध पर लगाम लगाने को लेकर अलर्ट रहे। रात्रिकालीन गश्त से गायब रहना कमिश्नरेट के 11 दरोगा, तीन मुख्य आरक्षी और दो आरक्षी को भारी पड़ा। पुलिस आयुक्त मोहित अग्रवाल ने सभी 16 पुलिसकर्मियों को रविवार की रात क्राइम मीटिंग के दौरान निलंबित कर दिया। इनमें से सर्वाधिक पांच दरोगा लालपुर पांडेयपुर थाने में तैनात थे। निलंबित किए गए पुलिसकर्मियों की लापरवाही पुलिस आयुक्त की टीम की चेकिंग के दौरान उजागर हुई थी।यातायात पुलिस लाइन के सभागार में क्राइम मीटिंग में पुलिस आयुक्त ने कहा कि सभी थानाध्यक्ष प्रत्येक माह थाना स्तर पर सैनिक सम्मेलन करें। ताकि, पुलिसकर्मियों की समस्याओं का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर किया जा सके। शासन की मंशा, डीजीपी और जिले के उच्चाधिकारियों के आदेशों-निर्देशों के बारे में सिपाही भी जानें। प्रधान लिपिक कार्यालय में कर्मचारियों की समस्याओं के दृष्टिगत कर्मचारी शिकायत निवारण रजिस्टर बनाया जाए।शिवपुर थाने के दरोगा प्रवीण सचान व आकाश सिंह, कैंट थाने के दरोगा आलोक कुमार व योगेंद्र नाथ मिश्रा, मंडुवाडीह थाने के दरोगा अजय त्यागी, लोहता थाने के दरोगा विश्वास चौहान, लालपुर पांडेयपुर थाने के दरोगा चंद्रेश प्रसाद, अमृत राज, किशन सोनी, सैंकी प्रसाद व मनीष कुमार चौधरी, और कैंट थाने के मुख्य आरक्षी अखिलेश यादव, राम कुमार सिंह व मनीष श्रीवास्तव और दशाश्वमेध थाने के आरक्षी रामचंद्र व लालपुर पांडेयपुर थाने के आरक्षी मनीष कुमार तिवारी।

भव्य कलश यात्रा के साथ श्रीराम कथा का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। सेक्टर 82 स्थित ईडब्ल्यूएस पॉकेट 7 में आयोजित श्रीराम कथा का विशाल कलश यात्रा के साथ हुआ शुभारंभ हुआ। बैंड बाजे व ढोल नगाड़ों साथ 207 महिलाओं ने अपने सिर पर कलश रखकर पूरे सेक्टर में कलश यात्रा निकाली। शोभा यात्रा में आगे आगे घोड़े, ऊंट फिर बैंड बाजा इसके बाद कथा व्यास महामंडलेश्वर पंचमानंद महाराज का रथ उसके पीछे कलश धारण किए महिलाएं एवं भक्तजन और ट्रेक्टर पर सवार भगवान राम, सीता , लक्ष्मण, हनुमान जी शोभायात्रा को शोभायमान कर रहे थे। बैंड बाजों की थाप पर थिरकते श्रद्धालुओं के जय श्रीराम के उद्घोष ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया। कलश यात्रा पूरे सेक्टर 82 एवं 93 में घूमती हुई पुनः कथा स्थल पहुंची इस दौरान जगह फूलों से कलश यात्रा का भव्य स्वागत किया गया और जलपान की भी व्यवस्था की गई। कथा व्यास महामंडलेश्वर स्वामी पंचमानन्द महाराज ने राम कथा का महात्म्य बताते हुए कहा कि जन्म जन्मांतर के पुण्यों के अभ्युदय होने पर हमें राम कथा रूपी अमृत पान करने का शुभ अवसर प्राप्त होता है। श्रीराम कथा के श्रवण मात्र से हमारे मेरु समान पापों का शमन हो जाता है। राम कथा संस्कारों का बीजारोपण करती है। सती चरित्र एवं पार्वती विवाह का रोचक प्रसंग व्यास जी द्वारा सुनाया गया इस अवसर पर आरडब्ल्यूए अध्यक्ष राघवेंद्र दुबे ने बताया कि सभी पॉकेट वासियों के सहयोग से यह श्रीराम का आयोजन हो रहा है। श्रीराम कथा नित्य 4 बजे से 8 बजे तक होगी। 7 अप्रैल को नारद मोह, श्रीराम जन्म, अहिल्या उद्धार आदि कथाओं का वर्णन किया जाएगा। सभी श्रद्धालु भक्तों से अनुरोध है कि कथामृत का रसपान कर पुण्यलाभ अवश्य अर्जित करें। इस अवसर पर देवमणि शुक्ला, संजय पांडे, गोरे लाल, रवि राघव, देवेंद्र गुप्ता, सुशील पाल, हरी सिंह, अंगद तोमर, रमेश दास, रमेश चंद्र शर्मा, विष्णु शर्मा, रमेश वर्मा, हंसमणि शुक्ला, अनूप सिंह , संगम प्रसाद मिश्र, राजवीर सिंह, विकास शर्मा, रमेश गुप्ता, विजय जी, प्रकाश जोशी सर्वेश तिवारी, वीके मिश्रा , विवेक कुमार सिंह, अनिल कुमार शर्मा, अवनीश शर्मा, सत्येन्द्र प्रताप सिंह, राजेश कुमार पाठक, अरून गौर, दीपक तिवारी, उत्तम चंद्रा, दिनेश पाठक, विनोद शर्मा, जितेंद्र सिंह, कुंदन सिंह, अनिल चौधरी, धर्मेंद्र सिंह, विनय त्रिवेदी, शिव कुमार पाठक, रंजन गिरि, शिव व्रत तिवारी, धर्मेंद्र कुमार मिश्रा, अरविन्द परिहार, पप्पू सिंह, रमेश चंद्र गुप्ता, प्रदीप कुमार यादव, विकास कुमार, वी सी पान्डेय, ललित कुमार फुलेरा, सहित भारी संख्या में भक्त मौजूद रहे।

सोनभद्र, मिर्जापुर

खाई में पलटी कार, हेड कांस्टेबल समेत चार लोग घायल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

कोन। थाना क्षेत्र के कोन-चांचीकला मार्ग पर लौंगा देवाटन के पास कार अनियंत्रित होकर दस फीट गहरी खाई में पलट गई। हादसे में कार सवार हेड कांस्टेबल समेत चार लोग घायल हो गए।बिहार के रोहतास जिले के नौहट्टा निवासी अंकित कुमार, चंदन दुबे व अमरेश दुबे कार से नवमी पर अमिला धाम आए थे। दर्शन पूजन के बार तीनों कार से पोखरिया चौकी पार कर तरिया क्षेत्र से बिहार जा रहे थे। रास्ते में किसी को धक्का लग गया, जिससे बिहार के मटिआंव में ग्रामीणों ने कार रोकने के लिए पथराव व बैरिकेडिंग कर दी। कार सवार आनन-फानन गाड़ी को पीछे कर कोन से झारखंड की ओर से भागने लगे। उन्हें भागते देख बिहार की यदुनाथपुर पुलिस ने कार पकड़ने के लिए पोखरिया चौकी को सूचना दी। पोखरिया चौकी की पुलिस ने कार को रोक लिया। चौकी पर तैनात हेड कांस्टेबल नित्यानंद भी कार में सवार होकर आ रहे थे। इसी दौरान लौंगा बांध देवाटन के पास अनियंत्रित होकर कार खाई में पलट गई। लोगों ने घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

फाइनल में सुपर स्टार दुद्धी ने महुली जूनियर को हराया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

महुली। दुद्धी विकासखंड के महुली में श्री राजा बरियार शाह खेल मैदान में नाइट कैनवस क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले में सुपर स्टार दुद्धी की टीम ने जीत हासिल की। उसने मेजबान महुली जूनियर टीम को हराया।टॉस जीतकर सुपर स्टार दुद्धी ने पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया और निर्धारित ओवरों में छह विकेट खोकर 121 रन बनाए। अंकित ने सर्वाधिक 41 रन बनाए। जवाब में मेजबान महुली जूनियर टीम सात विकेट पर 113 रन ही बना सकी। मैन आफ द मैच का पुरस्कार 41 रन बनाने एवं चार विकेट लेने वाले दुद्धी के अंकित कुमार को दिया गया। मुख्य अतिथि डीसीएफ दुद्धी के पूर्व चेयरमैन सुरेंद्र अग्रहरि ने विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान करते हुए शुभकामनाएं दीं। कहा कि टूर्नामेंट में फाइनल मुकाबले तक पहुंचना किसी भी टीम की श्रेष्ठता को साबित करता है। उन्होंने कहा कि खेलने वालों को हार व जीत दोनों का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

ग्रामीणों ने वन विभाग के खिलाफ प्रदर्शन किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

खलियारी। नगवां ब्लॉक की ग्राम पंचायत सिकरवार के साइसोत गांव में पेयजल संकट गहराता जा रहा है। शुद्ध पेयजल की आपूर्ति के लिए बिछाई गई पाइपलाइन को चंदौली जिले के वन विभाग की ओर से बार-बार नुकसान पहुंचाया जा रहा है, जिससे ग्रामीणों में आक्रोश है। शनिवार की देर शाम ग्रामीणों ने वन विभाग के खिलाफ नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया। दोषी कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।ग्रामीणों ने बताया गांव में लंबे समय से पेयजल संकट बना हुआ था। वे नदी-नालों का दूषित पानी पीने के लिए विवश थे। इस समस्या को मीडिया में प्रमुखता से उजागर किए जाने के बाद जल निगम हरकत में आया और जल जीवन मिशन के तहत गांव में पाइपलाइन बिछाई गई। उस समय भी चंदौली वन विभाग ने अड़चन डाली थी, लेकिन कई प्रयासों के बाद आखिरकार पानी की आपूर्ति शुरू हो सकी। ग्रामीणों का आरोप है कि शनिवार को वन विभाग के कर्मचारियों ने रोड किनारे बिछी पाइप लाइन को उखाड़ कर क्षतिग्रस्त कर दिया। जब ग्रामीणों को इसकी जानकारी हुई तो उन्होंने ग्राम प्रधान और पुलिस को सूचना दी। वन विभाग के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। हालांकि वन विभाग के दरोगा ने पाइप उखाड़ने की बात से इन्कार किया है। गांव निवासी मराछू राम और संपत ने कहा कि अब वन विभाग की मनमानी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अगर जल्द समाधान नहीं हुआ तो सभी लोग डीएम कार्यालय का घेराव करेंगे। प्रदर्शन में हीरालाल, शारदा भारती, संजय, गोपाल, राकेश, समसेर, राम बचन, बनारसी, फुलवा देवी, लक्ष्मीना, बचीया, सोना, धनमतिया, कलावती, परियारी, रामावती समेत दर्जनों ग्रामीण शामिल रहे। वहीं, मामले में जल निगम के एक्सईएन अरुण सिंह ने बताया कि चंदौली वन विभाग से बात चल रही है और जल्द ही अनुमति लेकर पाइप लाइन को अंडरग्राउंड कर दिया जाएगा, जिससे भविष्य में कोई समस्या न हो।

अल्पकालीन निविदा/कोटसन सूचना 2025/26

कार्यालय ग्राम पंचायत बुडहरखुर्द विकास खंड- राबर्टसगंज जिला सोनभद्र

पत्रांक-मेमो/ग्रा0पं0 दिनांक-07.04.2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत बुडहरखुर्द में वित्तीय वर्ष 2025-26 मे मनरेगा/राज्य वित्त/केन्द्रीय वित्त/SLWM/SBM/ अन्य निधियों से प्राप्त धनराशि से निमार्ण कराये जाने हेतु व्यापार कर विभाग आयकर में पंजीकृत फर्मो के द्वारा ग्राम पंचायत परिधि के अन्दर निम्न विवरणनुसार कार्यस्थल पर सामग्री आपूर्ति कराने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है। ईंट प्रथम श्रेणी, सोलर लाईट,स्ट्रीट लाईट, टैंकर क्रय, टैंकर मरम्मत बालू, डाला गिट्टी, सोलिंग गिट्टी, इंटरलॉकिंग ईट, सीमेंट पटिया, टीन शेड, ऐजबेस्टेस सीट, शौचालय निर्माण सामग्री, PVC पाईप बौल्डर, सरिया, स्टोन डस्ट, GSB, हैडपंप सामग्री, हैडपंप रिबोर/बोर, पेन्टिग सामग्री, ई-रिक्शा, ढेला-गाडी, सफाईकमी, किट हयूम पाईप, लोहे का (दरवाजा, खिडकी,एंगल,पाईप), बिजली वायरींग सामग्री, समरसिवल पंप, सोलर पंप, अन्य सामग्री। इच्छुक आपुर्तिकर्ता निविदा दिनांक 09.04.2025 सें 15.04.2025 तक ग्राम पंचायत कार्यालय पर जमा कर सकते हैं। जिसमें दिनांक 16.04.2025 को 05.00 बजे निविदा दाता उपस्थित रहना चाहतें है के समक्ष ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोला जायेगा।

प्रतिबंध और शर्तेः- 1- निविदा की सभी दरें कर सहित लोक निर्माण विभाग की स्वीकृत दर से अधिक नही होनी चाहिए। 2- जमानत धनराशी और अन्य जानकारी हेतु ग्राम पंचायत कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं। 3- खराब आपूर्ति की दशा में जमानत की राशि जब्त की जायेगी। 4- सशर्त निविदा स्वीकार्य नही की जायेगी। 5- बिना कारण बताये किसी भी समय निविदा निरस्त करने का अधिकर अधोहस्ताक्षरी का होगा।

ग्राम प्रधान बुडहरखुर्द
विकास खंड-राबर्टसगंज, सोनभद्र

ग्राम पं0 सचिव बुडहरखुर्द
विकास खंड- राबर्टसगंज, सोनभद्र

स्पोर्ट्स

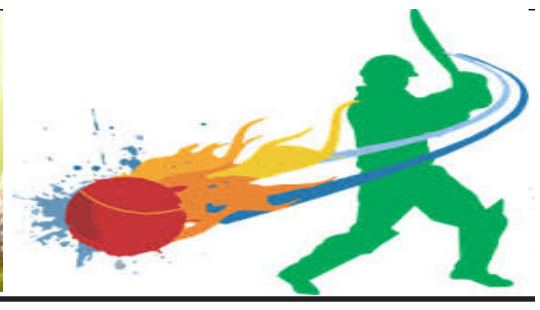

डबल हेडर के बाद अंक तालिका में बड़ा बदलाव, दिल्ली शीर्ष पर; चैंपियन रहीं चार टीमें सबसे नीचे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। ऑरेंज कैप और पर्पल कैप की जंग भी अब दिलचस्प हो चुकी है। ऑरेंज कैप की रेस में जहां लखनऊ सुपर जाएंट्स के निकोलस पूरन सबसे आगे हैं। वहीं, पर्पल कैप की रेस में चेन्नई सुपर किंग्स के चाइनामैन स्पिनर नूर अहमद सबसे आगे चल रहे हैं। आईपीएल 2025 में शनिवार को दो मुकाबले खेले गए। हालांकि, दोनों मुकाबले लगभग एकतरफा हुए। पहले मैच में दिल्ली कैपिटल्स ने चेन्नई सुपर किंग्स को हराया, जबकि दूसरे मैच में राजस्थान रॉयल्स ने पंजाब किंग्स को शिकस्त दी। इन दो मैचों के बाद अंक तालिका में काफी बदलाव हुआ है। पंजाब की टीम को जहां तीन स्थान का नुकसान हुआ, वहीं पूर्व चैंपियन रह चुकीं चार टीमें अंक तालिका में सबसे नीचे हैं। आइए जानते हैं अंक तालिका का मौजूदा हाल...दिल्ली के खिलाफ चेन्नई को 25 रन से हार का सामना करना पड़ा। यह दिल्ली की लगातार तीसरी जीत रही। टीम छह अंक और ₹1.257 का नेट रन रेट लेकर शीर्ष पर है। वहीं, चेन्नई की यह तीसरी हार रही। पांच बार की चैंपियन टीम एक जीत और दो अंक लेकर अंक तालिका में नौवें स्थान पर है। उसका नेट रन रेट -0.891 है। वहीं, राजस्थान को भी जीत का फायदा हुआ और टीम सातवें स्थान पर कायम है। उसने अभी तक चार में से दो मैच जीते हैं, जबकि दो में उसे हार मिली है। राजस्थान का नेट रन रेट -0.185 है। पंजाब की टीम को तीन स्थान का नुकसान हुआ। दिल्ली-चेन्नई मैच के बाद पंजाब किंग्स पहले से दूसरे स्थान पर लुढ़की, फिर राजस्थान से खुद के मैच के बाद चौथे स्थान पर लुढ़क गई। पंजाब ने तीन में से दो मैच जीते हैं और चार अंक लेकर चौथे स्थान पर है। उसका नेट रन रेट ₹0.074 है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु तीन में से दो जीत और चार अंक लेकर दूसरे स्थान पर है। उसका नेट रन रेट ₹1.149 है। वहीं, गुजरात टाइटंस तीन में से दो जीत और एक हार के साथ तीसरे स्थान पर है। उसका नेट रन रेट ₹0.807 है। फिर पंजाब का नंबर आता है। उसके बाद पांचवें स्थान पर कोलकाता नाइट राइडर्स है। केकेआर ने चार में से दो मैच जीते हैं और दो में उन्हें हार का सामना करना पड़ा है। उसके अंक चार हैं और नेट रन रेट ₹0.070 है। वहीं, लखनऊ चार मैचों में दो जीत और दो हार के साथ छठे स्थान पर है। उसके भी चार अंक हैं और नेट रन रेट ₹0.048 है।इसके बाद नीचे के चार स्थान पर चार पूर्व चैंपियन टीमें हैं। सातवें स्थान पर राजस्थान और आठवें स्थान पर मुंबई इंडियंस है। मुंबई ने चार में से एक मैच जीता है और तीन हार और दो अंक के साथ आठवें स्थान पर है। उसका नेट रन रेट ₹0.108 है। वहीं, चेन्नई सुपर किंग्स नौवें और सनराइजर्स हैदराबाद 10वें स्थान पर है। सनराइजर्स ने अब तक चार में से एक मैच जीता है। उसे तीन मुकाबलों में हार मिली है। टीम दो अंक और -1.612 के नेट रन रेट के साथ आखिरी स्थान पर है।आईपीएल 2025 में पांच अप्रैल तक हुए मैचों के बाद लखनऊ सुपर जाएंट्स के बल्लेबाज निकोलस पूरन ऑरेंज कैप की दौड़ में सबसे आगे हैं। पूरन ने चार मैचों में 218.48 के स्ट्राइक रेट से 201 रन बनाए हैं। दूसरे स्थान पर गुजरात टाइटंस के साई सुदर्शन हैं। उन्होंने तीन पारियों में 62 की औसत और 157.63 के स्ट्राइक रेट से 186 रन बनाए हैं। तीसरे स्थान पर लखनऊ सुपर जाएंट्स के मिचेल मार्श हैं। उन्होंने चार पारियों में 46 की औसत और 185.86 के स्ट्राइक रेट से 184 रन बनाए हैं। चौथे स्थान पर मुंबई के सूर्यकुमार यादव हैं। सूर्यकुमार ने चार पारियों में 57 की औसत और 161.32 के स्ट्राइक रेट से 171 रन बनाए हैं।चेन्नई सुपर किंग्स के स्पिनर नूर अहमद पर्पल कैप की दौड़ में फिलहाल सबसे आगे हैं। नूर शानदार गेंदबाजी कर रहे हैं और अब तक चार मैचों में 10 विकेट अपने नाम कर चुके हैं। दूसरे स्थान पर दिल्ली कैपिटल्स के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क हैं जिन्होंने तीन मैचों में नौ विकेट लिए हैं। इसके बाद मुंबई के कप्तान हार्दिक पांड्या और चेन्नई के खलील अहमद का नंबर आता है। दोनों ने आठ-आठ विकेट लिए हैं। लखनऊ से खेल रहे शार्दुल सात विकेट के साथ पांचवें स्थान पर हैं।

बतौर कप्तान वापसी करेंगे संजू, यशस्वी पर रहेगी निगाह; पंजाब लगाना चाहेगा जीत की हैट्रिक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पंजाब और राजस्थान की टीमें अब तक 28 बार आमने-सामने आ चुकी हैं। इनमें से राजस्थान ने 16 मैच जीते हैं, जबकि पंजाब ने 12 मैच जीते हैं। हालांकि, अब पंजाब का कप्तान और कोच दोनों बदल चुके हैं और टीम के खिलाड़ी इस सीजन पूरे आत्मविश्वास के साथ खेल रहे हैं। आईपीएल 2025 में शनिवार को डबल हेडर के दूसरे मुकाबले में पंजाब किंग्स का सामना राजस्थान रॉयल्स से होगा। यह मुकाबला न्यू चंडीगढ़ के एमवाईएस क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। मैच शाम साढ़े सात बजे शुरू होगा, जबकि टॉस इससे आधे घंटे पहले यानी शाम सात बजे होगा। पंजाब की टीम जीत की रथ पर सवार है और उसने अपने दोनों मैच जीते हैं। आज टीम जीत की हैट्रिक लगाने उतरेगी। वहीं, राजस्थान रॉयल्स शुरुआती दो मैच गंवाने के बाद चेन्नई के खिलाफ पिछले मैच में जीत की पटरी पर लौटी। संजू सैमसन को विकेटकीपिंग करने के लिए क्लीयरेंस मिल चुकी है और वह बतौर कप्तान आज के मैच में वापसी करेंगे। इस मैच सभी की निगाहें खराब फॉर्म में चल रहे यशस्वी जायसवाल पर टिकी रहेंगी। लह मैदान के बाहर की घटनाओं के बजाय अपने प्रदर्शन से सुर्खियां बटोरना चाहेंगे। यशस्वी हाल में तब चर्चा में आए थे जब उन्होंने मुंबई की टीम के अपने एक सीनियर साथी के साथ कथित मतभेदों के कारण घरेलू क्रिकेट में गोवा की तरफ से खेलने का फैसला किया। बाएं हाथ का यह बल्लेबाज आईपीएल में अभी तक अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाया है। उन्होंने दिन मैच में केवल 34 रन बनाए हैं जिसका उनकी टीम राजस्थान रॉयल्स पर काफी प्रभाव पड़ रहा है। सैमसन की अंगुली में चोट के कारण राजस्थान रॉयल्स ने रियान पराग को पहले तीन मैच के लिए कप्तान नियुक्त किया था। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में यह भी कहा गया था कि यशस्वी को यह फैसला भी पसंद नहीं आया था कि उन पर पराग को तरजीह दी गई। हालांकि, यह बात किसी से छुपी नहीं है कि जायसवाल आईपीएल और घरेलू क्रिकेट में बड़ी भूमिका निभाना चाहते हैं, लेकिन अभी उन्हें अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान केंद्रित करना होगा क्योंकि आईपीएल जैसे टूर्नामेंट में फॉर्म बद से बदतर होने में देर नहीं लगती।

पाकिस्तानी ऑलराउंडर खुशदिल शाह ने खोया आपा, प्रशंसक पर किया हमला; सुरक्षाकर्मियों ने किया बीच-बचाव

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पाकिस्तान की टीम इन दिनों न्यूजीलैंड के दौरे पर है। शुक्रवार को दोनों टीमों के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज का आखिरी मुकाबला खेला गया जिसमें न्यूजीलैंड ने उन्हें 84 रन से रौंदकर 3-0 से सीरीज अपने नाम कर ली। इस हार के बाद बौखलाए पाकिस्तानी ऑलराउंडर खुशदिल शाह फैंस से उलझ गए। बात इतनी बढ़ गई कि सुरक्षाकर्मियों को बीच-बचाव के लिए आना पड़ा। वनडे विश्व कप 2023, टी20 विश्व कप 2024 और चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में खराब प्रदर्शन के बाद अब न्यूजीलैंड दौरे पर भी पाकिस्तान का बुरा हाल हुआ है। न्यूजीलैंड के दौरे पर गई पाकिस्तान टीम को टी20 सीरीज में 4-1 से हार का सामना करने के बाद अब वनडे सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप का सामना करना पड़ा है। शनिवार को खेले गए तीसरे वनडे में न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को डकवर्थ लुईस नियम के आधार पर 43 रन से हरा दिया। जीत के लिए 42 ओवर में मिले 265 रन के लक्ष्य के जवाब में पाकिस्तान की टीम 40 ओवर में 221 रन पर सिमट गई। सलमान अली आगा के नेतृत्व में पाकिस्तान की टीम ने तीसरा टी20 नौ विकेट से जीता था।

ऋतुराज गायकवाड़ कोहनी की चोट से उबरे, धोनी को कप्तानी करते नहीं देख सके प्रशंसक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। गायकवाड़ को राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ पिछले मैच में चोट लगी थी और दिल्ली के खिलाफ मैच से पहले तक उनका खेलना तय नहीं माना जा रहा था। ऐसे में फैंस को उम्मीद थी कि गायकवाड़ की अनुपस्थिति में महेंद्र सिंह धोनी एक बार फिर टीम की कप्तानी करते दिख सकते हैं। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के नियमित कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ कोहनी की चोट से उबर गए हैं और वह दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मैच में खेल रहे हैं। दरअसल, गायकवाड़ को राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ पिछले मैच में चोट लगी थी और दिल्ली के खिलाफ मैच से पहले तक उनका खेलना तय नहीं माना जा रहा था। ऐसे में फैंस को उम्मीद थी कि गायकवाड़ की अनुपस्थिति में महेंद्र सिंह धोनी एक बार फिर टीम की कप्तानी करते दिख सकते हैं। हालांकि, गायकवाड़ के मैच में खेलने से फैंस धोनी को कप्तानी करने नहीं देख पाए। दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान अक्षर पटेल ने सीएसके के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया है। सीएसके के लिए राहत की बात यह है कि उसके नियमित कप्तान फिट हो गए हैं और इस मुकाबले में खेल रहे हैं। दिल्ली ने इस मुकाबले के लिए एक बदलाव किया है और फाफ डुप्लेसिस की जगह समीर रिजवी को अंतिम एकादश में शामिल किया है। डुप्लेसिस फिट नहीं होने के कारण इस मैच में नहीं खेल रहे हैं। सीएसके ने इस मैच के लिए दो बदलाव किए हैं। जैमी ओवरटन की जगह डेवोन कॉनवे को लिया गया है, जबकि राहुल त्रिपाठी के स्थान पर मुकेश चौधरी को जगह मिली है। दिल्ली के खिलाफ मैच से एक दिन पहले सीएसके के बल्लेबाजी कोच माइक हसी ने इस बात की पुष्टि की थी कि गायकवाड़ की फिटनेस का आकलन शुक्रवार को किया गया था, लेकिन उनके मैच में खेलने पर अंतिम फैसले मैच के दिन हुआ। हसी से यह पूछा गया था कि अगर ऋतुराज फिट नहीं हो सके तो क्या टीम किसी कार्यवाहक कप्तान के बारे में सोच रही है? इस हसी ने संकेत दिए थे कि विकेट के पीछे एक 'युवा' खिलाड़ी शनिवार के मैच में कप्तानी कर सकता है। हसी का इशारा धोनी की तरफ था जिससे फैंस को लग रहा था ।

मुल्लांपुर में पंजाब ने गंवाया पांचवां मुकाबला, नेहल वढेरा और ग्लेन मैक्सवेल की मेहनत पर फिरा पानी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी राजस्थान ने यशस्वी जायसवाल की अर्धशतकीय पारी की बदौलत 20 ओवर में चार विकेट खोकर 205 रन बनाए। जवाब में पंजाब निर्धारित ओवर में नौ विकेट गंवाकर सिर्फ 155 रन बना सकी। इस तरह राजस्थान ने यह मैच 50 रन से जीत लिया। राजस्थान रॉयल्स ने पंजाब किंग्स को 50 रन से हराकर उनका विजय रथ रोक दिया। शनिवार को मुल्लांपुर में खेले गए इस मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी राजस्थान ने यशस्वी जायसवाल की अर्धशतकीय पारी की बदौलत 20 ओवर में चार विकेट खोकर 205 रन बनाए। जवाब में पंजाब निर्धारित ओवर में नौ विकेट गंवाकर सिर्फ 155 रन बना सकी। इस तरह संजू सैमसन के नेतृत्व वाली टीम ने लगातार दूसरी जीत दर्ज की। इस मैदान पर पंजाब को छह मैचों में पांचवीं हार का सामना करना पड़ा है। वहीं, इस सत्र की यह उनकी पहली शिकस्त है। इससे पहले श्रेयस अय्यर के नेतृत्व वाली टीम ने गुजरात टाइटंस और लखनऊ सुपर जाएंट्स को मात दी थी। वहीं, राजस्थान को चार में से दो मैचों में जीत मिली है। इस शिकस्त के साथ पंजाब अंक तालिका में चौथे पायदान पर लुढ़क गई जबकि राजस्थान सातवें स्थान पर पहुंच गई। शीर्ष पर दिल्ली कैपिटल्स है जिसने चेन्नई सुपर किंग्स को 25 रन से हराया था। लक्ष्य का पीछा करने उतरी मेजबान टीम की झटके के साथ शुरुआत हुई थी। जोफ्रा आर्चर ने पहले ही ओवर में दो विकेट झटके। उन्होंने पहले प्रियांश आर्या को पहली गेंद पर बोल्ड किया। इसके बाद छठी गेंद पर कप्तान श्रेयस अय्यर को चलता किया। वह सिर्फ 10 रन बना सके। इसके बाद संदीप शर्मा ने मार्कस स्टोइनिस और कुमार कार्तिकेय ने प्रभसिमरन सिंह को पवेलियन की राह दिखाई। 43 के स्कोर पर चार विकेट खो चुकी पंजाब को एक बड़ी साझेदारी की जरूरत थी। ऐसे में टीम को नेहल वढेरा और ग्लेन मैक्सवेल का साथ मिला। दोनों के बीच पांचवें विकेट के लिए 52 गेंदों में 88 रनों की साझेदारी हुई। हालांकि, दोनों टीम को जीत नहीं दिला सके और एक के बाद एक विकेट आउट हो गए। पहले महीश तीक्षणा ने 15वें ओवर की आखिरी गेंद पर मैक्सवेल (30) को कैच आउट कराया। इसके बाद वानिंदु हसरंगा ने वढेरा को ध्रुव जुरेल के हाथों कैच आउट कराया। वह 41 गेंदों में 62 रन बनाकर लौटे। वढेरा ने 32 गेंदों में इस सत्र का अपना पहला पचासा जड़ा। नेहल और मैक्सवेल के बाद पंजाब की पारी लड़खड़ा गई। उनके लिए सूर्यांश शेडगे ने दो, मार्को यानसेन ने तीन और अर्शदीप सिंह ने एक रन बनाया। वहीं, शशांक सिंह और लॉकी फर्ग्यूसन क्रमशः 10 और चार रन बनाकर नाबाद रहे। राजस्थान के लिए जोफ्रा आर्चर ने तीन विकेट लिए जबकि संदीप शर्मा और महीश तीक्षणा को दो-दो सफलताएं मिलीं। इसके अलावा कुमार कार्तिकेय और वानिंदु हसरंगा ने एक-एक विकेट अपने नाम किया। इससे पहले, यशस्वी जायसवाल और संजू सैमसन ने इस मुकाबले में अपनी टीम को अच्छी शुरुआत दिलाई थी। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 89 रनों की साझेदारी हुई। लॉकी फर्ग्यूसन ने दोनों बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाया। बतौर कप्तान इस मुकाबले में खेलने उतरे सैमसन 26 गेंदों में 38 रनों की पारी खेलकर आउट हुए जबकि बाएं हाथ के बल्लेबाज यशस्वी ने तीन चौकों और पांच छक्कों की सहायता से 67 रन बनाए। उन्होंने 40 गेंदों में अपने आईपीएल करियर का 10वां पचासा पूरा किया। यह उनका सबसे धीमा अर्धशतक भी है। बाएं हाथ के बल्लेबाज ने इससे पहले मुंबई इंडियंस (आईपीएल 2024) के खिलाफ 31 गेंदों में पचासा जड़ा था। सैमसन-जायसवाल के अलावा रियान पराग ने 43ङ, नीतीश राणा ने 12, शिमरन हेटमायर ने 20 और ध्रुव जुरेल ने 13ङ रन बनाए। पंजाब के लिए लॉकी फर्ग्यूसन ने दो विकेट लिए जबकि अर्शदीप सिंह और मार्को यानसेन को एक-एक सफलता मिली।

राशि फल

कुछ कार्य जिसकी पिछले कुछ दिनों से प्लानिंग चल रही है, आज शुरू हो सकता है, जिससे आपको आर्थिक स्थिति में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन की योग बन रहे हैं	आज का दिन अच्छा है। परिवार में कोई नया सदस्य आ सकता है। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। व्यापार आदि में सहयोगी पार्टनर के माध्यम से आय के नए स्रोत बनेंगे	किसी कार्य विशेष को लेकर आज यात्रा आदि पर बाहर जा सकते हैं। यात्रा में सावधानी बरतें, नहीं तो आपको नुकसान हो सकता है। साथ ही परिवार में किसी अपने के स्वास्थ्य से आप चिंतित रह सकते हैं।	आज आप व्यर्थ की भागदौड़ से परेशान हो सकते हैं। आपका मन अशांत रहेगा। कार्य की अधिकता के कारण थकावट आदि महसूस होगी।
आज आप मानसिक रूप से उलझे रहेंगे। किसी बात को लेकर परिवार में परेशानी बढ़ सकती है, लेकिन आप अपनी कुशलता से उसे हल करने में सफल होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।	नौकरी आदि के लिए यदि प्रयास कर रहे है तो, आज आपको सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य आपका ठीक रहेगा, परंतु परिवार में माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।	आज आपका कोई महत्वपूर्ण कार्य न होने से आप मानसिक तौर से परेशान रह सकते है। आर्थिक स्थिति के कारण आपको किसी से मदद मांगनी पड़ सकती है। व्यापार-व्यवसाय में भी इस समय गिरावट महसूस होगी।	आज आप पतनी के स्वास्थ्य को लेकर कुछ परेशान रहेंगे। परिवार के लोग सहयोग करेंगे। व्यापार-व्यवसाय में अपने साथियों के विरोध के कारण आपको बड़ा नुकसान हो सकता है।
स्वास्थ्य को लेकर आप परेशान हो सकते हैं। साथ ही नौकरी आदि में अधिकारी वर्ग से मतभेद बढ़ने से आपकी परेशानी बढ़ेगी।	आज का दिन आपके लिए लाभदायक रहेगा। किसी अपने के द्वारा आपको कार्यक्षेत्र में बड़ा काम मिल सकता है, जिस कारण मन प्रसनन रहेगा।	आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिंक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।	मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

क्या धोनी लेंगे आईपीएल से संन्यास पहली बार 'थाला' को खेलते देखने पहुंचे माता-पिता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। चेन्नई सुपर किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच जारी मुकाबले में धोनी का पूरा परिवार पहुंचा। उनकी पत्नी साक्षी और बेटी जीवा के अलावा पिता पान सिंह और माता देविका देवी भी पहुंचीं। सीएसके ने चारों की तस्वीरें अपने सोशल मीडिया हैंडल से साझा कीं। आईपीएल 2025 का रोमांच जारी है। 18वें सत्र का 17वां मुकाबला चेन्नई सुपर किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच एमए चिदंबरम स्टेडियम में खेला गया। इस मैच में सीएसके के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के माता-पिता भी पहुंचे। यह पहला मौका है जब धोनी के माता-पिता को स्टेडियम में देखा गया। इस बीच सोशल मीडिया पर कुछ प्रशंसकों ने धोनी के आईपीएल से संन्यास की अटकलें लगाईं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। दिल्ली के खिलाफ धोनी सातवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए और उन्होंने 26 गेंदों में 30 रनों की नाबाद पारी खेली। हालांकि, दिल्ली ने यह मुकाबला 25 रन से जीत लिया। चेन्नई सुपर किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच जारी मुकाबले में धोनी का पूरा परिवार पहुंचा। उनकी पत्नी साक्षी और बेटी जीवा के अलावा पिता पान सिंह और माता देविका देवी भी पहुंचीं। सीएसके ने चारों की तस्वीरें अपने सोशल मीडिया हैंडल से साझा कीं। कुछ फैंस ने कयास लगाए कि 'थाला' आज आईपीएल से संन्यास का एलान कर सकते हैं। हालांकि, धोनी ने ऐसी कोई घोषणा नहीं की। 43 वर्षीय धोनी आईपीएल के 18वें सत्र में खेलते नजर आ रहे हैं। धोनी ने पांच बार आईपीएल का खिताब जीता है और वह इस लीग के सबसे सफल कप्तान हैं। धोनी ने पिछले सीजन से ठीक पहले सीएसके की कमान छोड़ दी थी जिसके बाद ऋतुराज गायकवाड़ टीम के कप्तान बनाए गए थे। गायकवाड़ की कप्तानी में सीएसके पिछले सत्र में पांचवें स्थान पर रही थी और प्लेऑफ में जगह बनाने से चूक गई थी। धोनी पिछले सीजन सातवें या आठवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतर रहे थे। धोनी अंतिम समय में बल्लेबाजी के लिए आते थे और कुछ शानदार शॉट खेलकर प्रशंसकों का मनोरंजन करते दिखे थे। धोनी ने आईपीएल 2024 में 220 से अधिक के स्ट्राइक रेट और 53.67 के औसत से 161 रन बनाए थे। पिछले सीजन के दौरान धोनी कथित तौर पर चोट की समस्या से भी जूझ रहे थे। धोनी ने कुछ साल पहले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया था। आईपीएल नियम के अनुसार पांच साल या इससे अधिक समय पहले संन्यास ले चुके खिलाड़ी को अनकैप्ड प्लेयर माना जाता है इसलिए सीएसके ने आईपीएल 2025 के लिए मेगा नीलामी से पहले धोनी को अनकैप्ड प्लेयर के तौर पर रिटेन किया था। धोनी ने हाल ही में संकेत दिए थे कि उनमें कुछ वर्ष और खेलने की क्षमता शेष है।

सम्पादकीय

आपदा का रूप धारण करती लू, शारीरिक संकट ही नहीं, बल्कि यह सामाजिक-आर्थिक के लिए भी गंभीर मुद्दा

इस बार अप्रैल की शुरुआत में ही गर्मी ने असर दिखाना शुरू कर दिया है। कई राज्य सरकारों ने लू को लेकर चेतावनी जारी की है, लेकिन उनमें लू लगने के बाद इलाज के लिए अस्पताल में व्यवस्था आदि पर ज्यादा जोर है। लू से निपटने के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने सभी राज्यों को एडवाइजरी जारी कर इससे निपटने के लिए कार्ययोजना बनाने को कहा है। हालांकि इस तरह की योजनाएं हर साल बनती हैं। इसके बावजूद लोगों की मौत हो जाती है। केंद्रीय गृह मंत्रालय की एक स्थायी समिति ने सुझाव दिया है कि नई उभरती आपदाओं में लू को भी शामिल किया जाए। समिति का कहना है कि देश में वर्ष 2013 के बाद दस वर्षों में 10,635 लोग लू से मारे गए और अब इसका असर व्यापक होता जा रहा है। 2020 से 2022 के बीच देश में हीट स्ट्रोक के कारण होने वाली मौतों की संख्या

530 से 730 हो गई। लू केवल इंसान को शारीरिक संकट ही नहीं देती है, बल्कि यह निम्न वर्ग, खुले में काम करने वाले जैसे-यातायात पुलिस, गिग-वर्कर, रेहड़ी-रिक्शा चलाने वालों के साथ-साथ किसानों और मजदूरों पर भी सामाजिक-आर्थिक रूप से विपरीत प्रभाव डालती है। लू आमतौर पर रुकी हुई हवा की वजह से होती है। उच्च दबाव प्रणाली हवा को नीचे की ओर ले जाती है। यह नीचे बहती हुई हवा एक टोपी की तरह काम करती है। यह गर्म हवा को एक जगह पर जमा कर लेती है। हवा के चले बिना बारिश नहीं हो सकती है। शहरों में बढ़ रहे कंक्रीट के जंगल भी इन गर्म हवाओं की घातकता को बढ़ा रहे हैं। गर्म हवा को और गर्म होने से रोकने के लिए कोई उपाय नहीं होता है। मानव शरीर का औसत तापमान 37 डिग्री सेल्सियस होता है। जब बाहर का तापमान 40 से अधिक हो और हवा में बिल्कुल नमी नहीं हो तो यह घातक लू में बदल जाती है। पांच साल पहले केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की 'जलवायु परिवर्तन मूल्यांकन रिपोर्ट' में आगाह किया गया था कि 2100 के अंत तक भारत में गर्मियों (अप्रैल-जून) में चलने वाली लू या गर्म हवाएं तीन से चार गुना अधिक हो सकती हैं। इनकी औसत अवधि भी दोगुनी होने का अनुमान है। वैसे तो लू का असर पूरे देश में ही बढ़ेगा, मगर घनी आबादी वाले गंगा नदी बेसिन के इलाकों में इसकी मार ज्यादा तीखी होगी। इसमें चेताया गया है कि बीते छह दशकों के दौरान बढ़ती गर्मी और मानसून में कम बरसात के चलते देश में सूखा-ग्रस्त इलाकों में इजाफा हो रहा है। यह चिंताजनक है कि सूखा प्रभावित क्षेत्र में प्रति दशक 1.3 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय संगठनों के सहयोग से तैयार जलवायु पारदर्शिता रिपोर्ट, 2022 का कहना है कि 2021 में भीषण गर्मी के चलते भारत में सेवा, विनिर्माण, खेती और निर्माण क्षेत्रों में लगभग 13 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। गर्मी बढ़ने के चलते 167 अरब घंटे संभावित श्रम का नुकसान हुआ, जो 1999 के मुकाबले 39 प्रतिशत अधिक है। इस रिपोर्ट के अनुसार तापमान में डेढ़ प्रतिशत का इजाफा होने पर बाढ़ से हर साल होने वाला नुकसान 49 प्रतिशत बढ़ सकता है। वहीं चक्रवात से होने वाली तबाही में भी इजाफा होगा। इसी क्रम में लैंसेट काउंट डाउन की रिपोर्ट कहती है कि भारत में वर्ष 2000-04 और 2017-21 के बीच भीषण गर्मी से होने वाली मौतों की संख्या 55 प्रतिशत बढ़ी। गत वर्ष संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन ने भारत में एक लाख लोगों के बीच सर्वे कर बताया कि गर्मी/लू के कारण गरीब परिवारों को अमीरों की तुलना में पांच प्रतिशत अधिक आर्थिक नुकसान होता है। आर्थिक रूप से संपन्न लोग बढ़ते तापमान के अनुरूप अपने कार्य को ढाल लेते हैं, जबकि गरीब ऐसा नहीं कर पाते। इसके बावजूद आखिर अभी तक हम लू से बचने की कोई माकूल कार्ययोजना क्यों नहीं बना पाए हैं? अहमदाबाद नगर निगम अपने सभी बाग-बगीचे दिन में एक से पांच बजे तक रेहड़ी, पटरी और अन्य खुले में काम करने वालों के लिए खोल देता है। इससे खुले में काम करने वालों को लू के चरम प्रभाव वाले समय में पेड़ों की छांव में रहने का अवसर मिल जाता है। हाल में मुंबई में भी सड़क पर व्यवसाय करने वालों ने ऐसे ही पार्क को खोलने की मांग की है। यह एक छोटा-सा प्रयोग है जिसमें बगैर किसी अतिरिक्त खर्च के मौजूदा संरचना में ही लू की मार से बचने में मदद मिलती है। ओडिशा के कुछ शहरों में ट्रैफिक रेड लाइट पर हरा पारदर्शी शेड लगाया गया है, जिससे दोपहिया चालकों को कुछ राहत मिलती है। इसके अलावा सार्वजनिक प्याऊ अधिक से अधिक खोलना भी लू को बड़ी टक्कर दे सकता है। यह तय है कि जिस तरह मौसम का मिजाज बदल रहा है, उससे मौसम का अनियमित और चरम स्वरूप जैसे कि तापमान में वृद्धि को झेलना ही है। यदि लू के प्रकोप से बचना है तो कस्बा-ग्राम स्तर पर परिवेश को पर्यावरण अनुकूल बनाने के प्रयास करने होंगे, क्योंकि बढ़ते तापमान से स्वास्थ्य प्रणाली पर हानिकारक असर हो रहा है। सरकारी या निजी क्षेत्र में काम के समय को सुबह दस बजे तक और फिर शाम को पांच बजे से करने की योजना बनानी होगी। मेहनतकश और खुले में काम करने के लिए मजबूर लोगों के लिए शेड, पंखे आदि की व्यवस्था के साथ-साथ बेहतर स्वास्थ्य सेवा की योजना भी जरूरी है। देश में हरियाली बढ़ानी होगी और जल स्रोतों का संरक्षण करना होगा।

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में असमानता और भारत की सेहत का आईना

भारत का कुल स्वास्थ्य बजट 2024-25 में सकल घरेलू उत्पाद का केवल 2.1ज्ञ् है, जबकि का मानक न्यूनतम 5ज्ञ् है। यह बजट अपेक्षाकृत कम है, खासकर तब जब हम देखते हैं कि भारत में एक बड़े हिस्से को अभी भी बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिल रही हैं। हर वर्ष 7 अप्रैल को जब विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है, तो यह अवसर केवल औपचारिकता नहीं होना चाहिए, बल्कि यह

आत्ममंथन का दिन होना चाहिए। विशेष रूप से भारत जैसे देश के लिए जहां स्वास्थ्य सेवाएं आज भी बहुसंख्यक आबादी के लिए दुर्लभ और असमान हैं।एक ओर चमकते शहरों में आधुनिक अस्पताल हैं, तो दूसरी ओर करोड़ों गरीब नागरिक ऐसे हैं जो बुनियादी चिकित्सा सुविधा तक नहीं पहुंच पाते। भारत में स्वास्थ्य आज भी एक सेवा नहीं, संघर्ष है- गरीबी, कुपोषण, असमानता और उपेक्षा से जूझते लोगों के लिए यह दिवस एक चेतावनी है कि विकास की दौड़ में पीछे छूट गए लोगों की सेहत की सुध लेना अब टालना संभव नहीं।भारत ने पिछले कुछ दशकों में स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। पोलियो उन्मूलन, कोविड-19 के दौरान टीकाकरण अभियान और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं के जरिए सरकार ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। लेकिन ये सफलता की कहानियां केवल कहानी बन कर न रह जाएं, इसके लिए जरूरी है कि हम आंकड़ों की तह में जाकर असलियत को देखें। भारत का कुल स्वास्थ्य बजट 2024-25 में सकल घरेलू उत्पाद (उ्रझ्) का केवल 2.1ज्ञ् है, जबकि डब्ल्यूएचओ का मानक न्यूनतम 5ज्ञ् है। यह बजट अपेक्षाकृत कम है, खासकर तब जब हम देखते हैं कि भारत में एक बड़े हिस्से को अभी भी बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिल रही हैं। गांवों में तो सरकारी अस्पताल अक्सर डॉक्टर, दवा और उपकरणों के अभाव में सिर्फ इमारत बनकर रह जाते हैं। भारत में स्वास्थ्य और गरीबी का संबंध इतना गहरा है कि अक्सर ये दोनों एक-दूसरे को जन्म देते हैं। जो लोग गरीब हैं, उन्हें पौष्टिक भोजन नहीं मिलता, वे अस्वच्छ माहौल में रहते हैं और चिकित्सा सुविधाओं तक उनकी पहुंच सीमित रहती है। जब वे बीमार पड़ते हैं, तो उनकी कमाई का बड़ा हिस्सा इलाज में चला जाता है, जिससे वे और गरीब हो जाते हैं। यह एक चक्रव्यूह है, जिससे निकलना आसान नहीं राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (ल्इप्ए-5) के अनुसार, भारत की लगभग 35ज्ञ् जनसंख्या अब भी कुपोषण से ग्रस्त है और बालकों में स्टंटिंग (लंबाई कम होना) और वेस्टिंग (वजन कम होना) जैसी समस्याएं आम हैं। इस कुपोषण का सीधा संबंध गरीबी से है, जो स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के साथ मिलकर एक भयावह तस्वीर प्रस्तुत करता है। भारत ने बाल मृत्यु दर में कमी लाने के प्रयास किए हैं, लेकिन अब भी यह दर कई विकसित देशों की तुलना में बहुत अधिक है। ल्इप्ए-5 के अनुसार, भारत में प्रति 1000 जीवित जन्मों पर 28 शिशुओं की मृत्यु हो जाती है। मातृ मृत्यु दर भी चिंताजनक है–हर 100,000 जन्मों पर 97 महिलाओं की मृत्यु होती है, जो बताता है कि गर्भावस्था और प्रसव भारत में अब भी जोखिमपूर्ण अनुभव है इसका मुख्य कारण है- स्वास्थ्य केंद्रों की कमी, प्रसव पूर्व देखभाल का अभाव, प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों की उपलब्धता में कमी और समाज में महिला स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भी भयावह है जहां महिलाएं अक्सर बिना किसी चिकित्सीय मदद के घर पर ही प्रसव करने को मजबूर होती हैं।भारत की स्वास्थ्य सेवाओं में सबसे बड़ा अंतर शहरी और ग्रामीण इलाकों के बीच है। शहरों में निजी अस्पतालों की भरमार है, जो महंगे हैं, लेकिन आधुनिक सुविधाओं से लैस हैं। वहीं गांवों में सरकारी अस्पताल भी दूर-दराज हैं और वहां योग्य डॉक्टरों की भारी कमी है। ग्रामीण भारत की लगभग 70ज्ञ् आबादी केवल 30ज्ञ् डॉक्टरों पर निर्भर है। यही नहीं, भारत में प्रति 1000 लोगों पर केवल 0.8 डॉक्टर उपलब्ध हैं, जबकि ेप्ध् का मानक 1:1000 है। स्वास्थ्य सेवाएं कितनी सुलभ हैं, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भारत में केवल 30ज्ञ् लोग ही किसी न किसी प्रकार के स्वास्थ्य बीमा से कवर हैं। बाकी लोग बीमारी की स्थिति में जेब से खर्च करने को मजबूर होते हैं एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर साल लगभग 6 करोड़ लोग सिर्फ इलाज पर खर्च के चलते गरीबी रेखा के नीचे चले जाते हैं। सरकार की आयुष्मान भारत योजना एक बड़ी पहल है, लेकिन जमीनी स्तर पर इसके लाभार्थियों को लेकर पारदर्शिता, अस्पतालों की भागीदारी और धोखाधड़ी की शिकायतें भी देखने को मिलती हैं। यह सवाल हर भारतीय को खुद से पूछना चाहिए। अगर यह दिवस केवल भाषण, रंगोली प्रतियोगिता और सेमिनारों तक सीमित रह गया, तो यह एक खोखली परंपरा बनकर रह जाएगा। लेकिन अगर इस दिन को स्वास्थ्य नीति पर पुनर्विचार, बजट में वृद्धि, और गरीबों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं की बेहतरी की दिशा में उठाया गया कदम बना दिया जाए- तो इसका असल महत्व सिद्ध होगा। यह दिवस एक अवसर है याद दिलाने का कि स्वास्थ्य कोई विलासिता नहीं, बल्कि मौलिक अधिकार है। भारत जैसे देश के लिए यह अवसर है सामाजिक विषमता के खिलाफ आवाज उठाने का, और एक ऐसे तंत्र को विकसित करने का जहां स्वास्थ्य सुविधा जाति, धर्म, वर्ग या क्षेत्र के आधार पर नहीं, बल्कि मानवता के आधार पर उपलब्ध हो भारत एक युवा देश है, लेकिन अगर उसकी युवा शक्ति कुपोषण, मानसिक तनाव, और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी से जूझती रहेगी, तो यह जनसंख्या बोझ बन जाएगी। हमें याद रखना चाहिए कि केवल आर्थिक विकास, बुलेट ट्रेन या स्मार्ट सिटी नहीं, बल्कि एक स्वस्थ नागरिक ही किसी देश की असली ताकत होता है। इस विश्व स्वास्थ्य दिवस पर हमें सिर्फ जागरूक होने की नहीं, जवाबदेही तय करने की जरूरत है- सरकार, समाज और स्वयं अपनी भी। क्योंकि जब तक भारत का आखिरी नागरिक भी स्वस्थ नहीं होगा, तब तक हम सच्चे अर्थों में एक विकसित राष्ट्र नहीं बन सकते।

जूली डार्टनेल- अभिनेता को पात्र बनाती

जूली को ऑस्कर (2013), बाफ्टा (2013) तथा गिल्ड (2015) तीनों पुरस्कार प्राप्त हुए। उस साल उन्हें गिल्ड अवार्ड दो श्रेणियों में प्राप्त हुआ। सर्वोत्तम पीरिएड एंड/अथवा करेक्टर मेकअप तथा सर्वोत्तम हेयर स्टाइल। सिनेमा में अभिनेताओं को तरह-तरह के वस्त्र उपयोग में लाने होते हैं, तरह-तरह का रूप धारण करना होता है, केश विन्यास भी परिवर्तित होता रहता है। इस तरह रूप एवं केश बदलना उन्हें पात्र में उतरने में सहायता देता है, दर्शक

को उनके चरित्र के साथ तालमेल बैठाने में सुविधा होती है।अभिनेतओं को पात्र में रूपांतरित करने में मेकअप कलाकारों का काफी महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह काम आजकल एक टीम वर्क हो गया है। इस टीम के प्रमुख को डॉयरेक्टर ऑफ मेकअप एंड हेयर स्टाइल कहते हैं। ऐसी ही एक डॉरेक्टर ऑफ मेक अप एवं हेयर स्टाइल की बात आज।शेक्सपियर इन लव' (1998), 'लेस मिजेरबेल्स', 'वांटेड' (2008), 'एलिस इन वंडरलैंड'(2010), 'वर्ल्ड वार ज़ेड' (2013), 'हार्ट ऑफ स्टोन' (2023), 'एस्ट्रोयड सिटी' (2023), 'मैस्ट्रो' (2023), 'बैक इन एक्शन' (2025) फिल्मों से जुड़ी जूली डार्टनेल 1 सितम्बर 1963 को पैदा हुई। उन्होंने टीवी के लिए भी काम किया है। 'लेनी ब्लू' (2002), 'लॉस्ट प्रिंस' (2003), 'कैंब्रिज स्पाइस' (2003, तीन एपिसोड), 'डिनोटोपिया' (2002-2003, छः एपिसोड), 'हेनरी न्न्छ्छ' (2003), 'फ्रेंच एंड सौन्डर्स' (2002-2003,दो एपिसोड), 'दि एम्प्रेशनेबल जोन कलशॉ' (2004) 'स्टेट ऑफ द यूनियन' (2022, दस एपिसोड) कुछ नाम हैं। उनके कैरियर की वास्तविक शुरुआत तब हुई जब उनका प्रवेश बीबीसी के मेकअप विभाग में हुआ। इस प्रसिद्ध संस्था में शामिल होने के लिए 1400 आवेदन आए थे जिसमें से मात्र 24 को चुना गया था जूली इन चौबीस में से थीं। इसमें सदस्य बनने हेतु उन्होंने ए लेवल एवं मेकअप तथा हेयर का कोर्स किया था। जूली को ऑस्कर (2013), बाफ्टा (2013) तथा गिल्ड (2015) तीनों पुरस्कार प्राप्त हुए। उस साल उन्हें गिल्ड अवार्ड दो श्रेणियों में प्राप्त हुआ। सर्वोत्तम पीरिएड एंड/अथवा करेक्टर मेकअप तथा सर्वोत्तम हेयर स्टाइल। दोनों पुरस्कार उन्हें फ्रांसेस हैनोन के साथ साझा प्राप्त हुए। यह दोनों को फिल्म 'द ग्रैंड बुदापेस्ट होटल' हेतु मिला।इसी तरह उन्होंने साझा बाफ्टा फिल्म 'लेस मिजेरबेल्स' हेतु मिला जिसे उन्होंने लीसा वेस्टकोट के साथ ग्रहण किया। 'लेस मिजेरबेल्स' के लिए ही उन्हें ऑस्कर मिला जिसे उनके साथ लीसा वेस्टकोट को यह मिला, फिल्म है 'लेस मिजेरबेल्स' जूली डार्टनेल इस समय फिल्म उद्योग की एक प्रसिद्ध प्रमुख हेयर एवं मेकअप कलाकार हैं। उन्होंने कई बड़े अभिनेताओं का श्रृंगार किया है जिसमें हग जैकमैन ('लेस मिजेरबेल्स'), टिल्डा स्विंडन ('द ग्रैंड बुदापेस्ट होटल'), क्रिस एवान (2011, 'कैप्टन अमेरिकाः द फर्स्ट एवेंजर'), क्रिस्टेन विग (2020, 'वंडर वुमन 84') शामिल हैं। उन्हें बड़े अभिनेताओं का केश विन्यास एवं मेकअप करना अच्छा लगता है। उन्हें यह करना पसंद है क्योंकि उनकी पृष्ठभूमि थियेटर की है। उनके इस कार्य का प्रारंभ 1989 में बीबीसी के 'प्रिंस कैस्पियन' से हुआ था। उन्हें प्राइमटाइम एमी अवार्ड भी प्राप्त है। अभी तक उनके श्रृंगार खाते में 56 फिल्म के नाम हैं। मगर यह सब उन्हें ऐसे ही नहीं मिल गया, इसके लिए इन लोगों को कड़ा संघर्ष करना पड़ा। कुछ समय पहले तक यह क्षेत्र भी पुरुषों के अधिकार में था। स्त्रियों को उनके बराबर पारिश्रमिक नहीं मिलता था। मगर एक समय ऐसा आया जब स्त्रियां अपने अधिकारों केलिए उठ खड़ी हुईं। वे समूह में एकत्र हुईं, उन्होंने कार्य करने की स्थिति में एवं पारिश्रमिक में बदलाव की मांग की। साल भर चले इस आंदोलन ने लोगों का ध्यान समस्या की ओर आकर्षित किया। सैंकड़ो लोग इससे जुड़े हुए हैं। उन्होंने समान पारिश्रमिक की मांग की है। इतना ही नहीं इन लोगों ने घंटे के हिसाब से वेतन की मांग की है क्योंकि कई बार यह काम सामान्य से अधिक समय की मांग करता है। इन लोगों ने अपने सम्मान की बात भी की है। कहा है, उन्हें साथ काम करने वालों से सम्मानपूर्ण भाषा एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार मिलना चाहिए, भविष्य में वे अपमान सहने को तैयार नहीं हैं, न ही 'गुडविल आवर' पर काम करने को राजी हैं। जल्द ही अच्छा समय आने की उम्मीद है। यह सब 2013 में 'लेस मिजेरबेल्स' ऑस्कर पुरस्कार के दिन प्रारंभ हुआ। काफी कुछ बदला है पर संघर्ष जारी है। मेकअप आर्टिस्ट का काम शूटिंग के कई घंटे पहले शुरु होता है और शूटिंग के दौरान एवं शूटिंग के बाद तक चलता है। 'लेस मिजेरबेल्स' में सैंकड़ों मेकअप/हेयर आर्टिस्ट लगे थे।जूली डार्टनेल कलाकार होने के साथ-साथ प्रशिक्षक भी हैं। उनके द्वारा प्रशिक्षित एक कलाकार के अनुसार जूली न केवल अपने क्षेत्र में कुशल हैं, वरन वे एक बेहतरीन इंसान एवं बहुत अच्छी प्रशिक्षक भी हैं। वे अकादमी में मेकअप एवं हेयर स्टाइल सिखाती हैं। हेयर डिजायनिंग एवं मेकअप द्वारा जूली अभिनेता को पात्र में ढ़ाल देती हैं। अभी जूली डार्टनेल से सिने-जगत को काफी कुछ मिलना है एवं उन्हें भी और पुरस्कार, और सम्मान मिलना है।

हवा से ईंटें बनाने की पर्यावरणीय तकनीक, बड़े पैमाने पर निवेश होगा व रोजगार बढ़ेगा

अमेरिकी वैज्ञानिकों ने हवा से कार्बन डाइऑक्साइड सोंखकर ईंट और टाइल बनाने की नई तकनीक विकसित की है। नई तकनीक से तैयार ईंटों?पर आग का असर?तुरंत नहीं होता, बल्कि?ये हल्की मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ती हैं, जिससे आग बुझाने में मदद मिलती है।हवा

से कार्बन डाइऑक्साइड संग्रहीत करने का कार्य दुनिया भर में बड़े स्तर पर हो रहा है। ईंट और टाइल कारगर साबित हुईं, तो इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश होगा व रोजगार बढ़ेगा। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने हवा से कार्बन डाइऑक्साइड सोंखकर ईंट और टाइल्स बनाने की नई तकनीक विकसित की है। यह तकनीक बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण, धरती के बढ़ते तापमान, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन जैसी विकट समस्याओं के लिए भी कारगर हो सकती है। यह तकनीक कोरल रीफ (समुद्री प्रवाल) से प्रेरित है और पर्यावरण के लिए बेहद फायदेमंद है। एनपीजे एडवांस मैन्युफैक्चरिंग जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक, इस तकनीक से 3डी प्रिंटेड ढांचों को एक खास कोटिंग देकर कैल्शियम और कार्बन डाइऑक्साइड के घोल में डुबोने पर एक ठोस और टिकाऊ ईंट व टाइल जैसी सामग्री तैयार हो जाती है। इससे तैयार ईंटों की?एक खासियत यह है कि इन पर आग का असर तुरंत नहीं होता है, बल्कि इनमें 30 मिनट तक तापमान सहने की क्षमता है।?आग लगने पर ये हल्की कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा छोड़ती हैं, जिससे आग बुझाने में मदद मिलती है। कार्बन रहित भवनों के निर्माण, कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करने में यह तकनीक बेहद कारगर साबित हो सकती है। स्विट्जरलैंड में स्थापित एक नई मशीन हवा से कार्बन डाइऑक्साइड चूस रही है। यह दुनिया का सबसे बड़ा व्यावसायिक संयंत्र है। जानकारी के मुताबिक, ज्यूरिख के निकट क्लाइमर्क्स एजी सुविधा, हवा से औद्योगिक पैमाने पर कार्बन डाइऑक्साइड को एकत्रित करने और इसे सीधे खरीदारों को बेचने वाली पहली सुविधा बन गई है। इस मशीन को विकसित करने वाले प्रबंधक के अनुसार, यह संयंत्र हर साल 900 टन कार्बन डाइऑक्साइड सोंखता है। क्लाइमर्क्स के मुताबिक, दुनिया की एक प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को पकड़ने के साथ यह?संयंत्र कृषि के लिए बेहद कारगर साबित हो सकता है, लेकिन इसके लिए 2,50,000 ऐसे और संयंत्रों को लगाने की जरूरत होगी। जिस तकनीक पर यह संयंत्र कार्य करता है, वह महंगी जरूर है, लेकिन प्रदूषण को कम करने की दिशा में बहुत बड़ी उम्मीद जगाती है।अमेरिका के दक्षिण पूर्व प्रांत हंड्सबिले, अलबामा में?एक व्यावसायिक सेंटर पर ऐसा संयंत्र लगा है, जिसके विशालकाय पंखे हवा को चैंबर में खींचते हैं। इस उपकरण के जरिये 4,000 टन कार्बन डाइऑक्साइड सोंखी जा सकती है, जो 870 कारों द्वारा उत्सर्जित प्रदूषण के बराबर है। हवा से सीधे कार्बन डाइऑक्साइड संग्रहीत करने का कार्य दुनिया भर में बड़े स्तर पर हो रहा है। अतः ईंट और टाइल कारगर साबित हुईं, तो आने वाले वक्त में इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर पूंजी निवेश होगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

सीएम रेखा ने कहा- निजी स्कूलों में मनमानी फीस वृद्धि रोकने के लिए बनेगा नया कानून, खातों का होगा ऑडिट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। शनिवार को अभिभावकों के प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने स्कूलों पर कड़ी कार्रवाई

और नया कानून लाने का आश्वासन दिया। निजी स्कूलों में मनमानी फीस वृद्धि रोकने के लिए दिल्ली सरकार नकेल कसने की तैयारी में है। शनिवार को अभिभावकों के प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने स्कूलों पर कड़ी कार्रवाई और नया कानून लाने का आश्वासन दिया।श्रीजन पैरेंट एसोसिएशन के पदाधिकारी नितिन गुप्ता ने बताया कि स्कूलों में मनमानी फीस वृद्धि के मुद्दे पर मुख्यमंत्री के समक्ष अभिभावकों ने अपनी बातों को रखा। इसमें स्कूल की ओर से अवैध रूप से फीस वृद्धि, अभिभावकों पर भुगतान के लिए जबरदस्ती का दबाव, किताबें, वर्दी, लेखन सामग्री की अनिवार्य खरीदारी, डिजिटल भुगतान पर पाबंदी, फीस के नाम पर छात्रों को मानसिक तौर पर प्रताड़ित करने सहित अन्य मुद्दों को उठाया गया। मुख्यमंत्री ने बातों को धैर्य से सुना और गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने आश्वासन दिया कि फीस वृद्धि की मनमानी को रोकने के लिए नया कानून लाया जाएगा। हमारी समस्याओं को गंभीरता से सुना, बल्कि सकारात्मक कार्रवाई का भरोसा दिया। इस बैठक से अभिभावकों को विश्वास है कि न्याय अवश्य मिलेगा और आवाज अनसुनी नहीं रहेगी। सभी अभिभावकों से आग्रह है कि बच्चों के लिए एक न्यायपूर्ण, पारदर्शी और तनावमुक्त शैक्षणिक माहौल सुनिश्चित करने में सहयोग करेंबता दें कि नए शैक्षणिक सत्र में दिल्ली के निजी स्कूलों पर 20 फीसदी तक फीस बढ़ोतरी का आरोप है। स्कूलों ने ट्यूशन फीस के अलावा वार्षिक शुल्क और विकास शुल्क में भी बढ़ोतरी की है। इससे अभिभावकों की जेब पर आर्थिक बोझ बढ़ गया है। रोजाना दिल्ली में किसी न किसी स्कूल द्वारा फीस बढ़ोतरी करने की सूचनाएं सामने आ रही है।दिल्ली में निजी स्कूलों की मनमानी रोकने के लिए शिक्षा निदेशालय ने सख्त कदम उठाया है। निदेशालय के अनुसार अवैध फीस वृद्धि के बारे में विभाग को शिकायतें मिल रही है। इस संबंध में विभाग न सतर्कता बढ़ा दी है। शिक्षा निदेशालय के नियमों का उल्लंघन करने कड़ी कार्रवाई होगी। अभिभावकों के अधिकारों की पूरी रक्षा और मामले की तत्काल जांच की जाएगी। मुख्यमंत्री ने न केवल फीस बढ़ाने वाले स्कूल का निरीक्षण जिला मजिस्ट्रेट की अध्यक्षता वाली उच्च स्तरीय टीम करेगी। जिससे अभिभावकों की शिकायत की जांच की जा सकें। डीएसईएआर 1973 के प्रावधानों के अनुसार गैर-अनुपालन करने वाले संस्थानों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इसके तहत निजी स्कूल की मान्यता को निलंबित करना/वापस लेना/रद्द करना और दोषी संस्थानों का प्रबंधन अपने हाथ में लेने की कार्यवाही शामिल है। निजी स्कूलों के खातों का विशेषीकृत ऑडिट वरिष्ठ लेखा पदाधिकारियों सहित नामित टीमों द्वारा किया जाएगा।न्यायालयों में फीस वृद्धि से संबंधित मामलों के संबंध में शीघ्र सुनवाई के प्रयास किए जा रहे है। विभाग का पक्ष अत्यंत तत्परता से रखा जाएगा। विभाग अनुचित फीस वृद्धि को रोकने और शिक्षा क्षेत्र में किसी भी प्रकार की मुनाफाखोरी या व्यावसायीकरण को रोकने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध और सशक्त है।विभाग किसी भी परिस्थिति में छात्रों के शैक्षणिक भविष्य को खतरे में डालने वाली किसी भी कार्रवाई की अनुमति नहीं देगा। जो निजी स्कूल अवैध रूप से और मनमाने ढंग से अचानक फीस बढ़ा रहे हैं उन पर कानून के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।

लालू यादव को लेकर सशंकित है कांग्रेस, लोकसभा जैसी हालत बिहार विधानसभा चुनाव में न हो जाए

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। बिहार कांग्रेस के प्रभारी कृष्णा अल्लावरू ने शनिवार को एम्स दिल्ली में जाकर राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव का हालचाल लिया। कांग्रेस के अंदर लालू को लेकर जिस तरह की आशंका है, उसमें यह जरूरी हो गया था।बिहार विधानसभा चुनाव में अभी करीब सात महीने का समय है, लेकिन राजनीतिक आयोजन शुरू हो गए हैं। देश के गृह मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह बिहार आकर लौट चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसी महीने बिहार आ रहे हैं। लेकिन, उससे पहले 7 मार्च को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी बिहार आने वाले हैं। कांग्रेस जिले-जिले तक राहुल गांधी के दौरे के लिए भीड़ जुटाने में जुटी हुई है। इस बीच शनिवार को बिहार कांग्रेस के नए प्रभारी कृष्णा अल्लावरू ने दिल्ली एम्स में जाकर राष्ट्रीय

जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव से उनका हालचाल लिया। वह भले भलमनसाहत लिए गए हों, लेकिन बिहार की राजनीति और लालू प्रसाद को ठीक से जानने वाले कांग्रेसी राजद अध्यक्ष को लेकर बुरी तरह सशंकित हैं। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में जनता दल यूनाइटेड और भारतीय जनता पार्टी के बीच 'बड़ा भाई-छोटा भाई' की लड़ाई का मजा लेने वाले महागठबंधन के दोनों प्रमुख दलों कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल को पता है कि यहां कौन बड़ा है। बीच में कांग्रेस ने तेवर दिखाने की कोशिश की थी, लेकिन फिर जगह पर आ गई। कांग्रेस नेताओं ने अलग-अलग तरह से बोलकर स्वीकार कर लिया कि बिहार में राजद ही बड़ा है। खैर, परेशानी यहां थी भी नहीं। परेशानी यह है कि कांग्रेस के लिए तेजस्वी यादव छोटी परेशानी और लालू प्रसाद तो बाकायदा ठेढ़ी खीर हैं। जब 2024 के लोकसभा चुनाव के पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ विपक्षी दलों का जुटान हुआ था, तब कांग्रेस को तत्कालीन महागठबंधन सरकार में दो और मंत्रीपद चाहिए था। तब महागठबंधन के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कांग्रेस को तेजस्वी यादव से डील करने के लिए छोड़ दिया। सरकार चली गई, लेकिन कांग्रेस तेजस्वी यादव को मैनेज नहीं कर सकी। फिर लोकसभा चुनाव के पहले महागठबंधन से जनता दल यूनाईटेड अलग हो गया। लोकसभा चुनाव में नामांकन की तारीख आ गई, लेकिन कांग्रेस लालू प्रसाद यादव से डील नहीं कर सकी। कोर्ट में विचाराधीन कुछ मामलों में प्रगति के बीच लालू प्रसाद यादव को कंधे-हाथ पर जख्म, शुगर, बीपी आदि की परेशानी के साथ पटना से दिल्ली ले जाकर एम्स में भर्ती कराया गया है। वह अभी वहीं हैं। क्रिटिकल केयर यूनिट में रहते हुए भी उनका सोशल मीडिया हैंडल एक्टिव रहा और वक्फ बिल को लेकर उनकी तीखी प्रतिक्रिया आई तो बिहार के कांग्रेसियों को लोकसभा चुनाव याद आ गया। यह ऐसा डर है, जिसपर अभी कोई खुलकर बात नहीं कर रहा। हालांकि, दिल्ली में बिहार के 40 संगठन जिलो के अध्यक्ष-कार्यकारी अध्यक्ष की बैठक में राहुल गांधी के सामने यह डर इशारों जरूर सामने आया। कई जिलाध्यक्षों ने कहा कि कांग्रेस जहां से चुनाव लड़ेगी, उसकी जानकारी जल्दी दे दी जाए। दरअसल, इस बात ने लोकसभा चुनाव की याद दिला दी जब कांग्रेस देखती रह गई और लालू ने अपने हिसाब से सीटों पर राजद प्रत्याशियों को चुनाव लड़ने के लिए सिम्बल दे दिया था।

हरियाणा में भाजपा कार्यालय का नया पता, थोड़ी देर में सीएम नायब सैनी करेंगे उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। भाजपा की राजनीति अब पंचकूला के पंचकमल से चलेगी। राम नवमी के दिन भाजपा अपने कार्यालय का शुभारंभ कर रही है। पंचकूला स्थित पंचकमल दफ्तर को मुख्यालय के तौर पर ही डिजाइन किया गया था। हरियाणा में आज से भाजपा कार्यालय का पता बदल जायेगा। अब पुराने पते रोहतक से शिफ्ट होकर कार्यालय का नया पता पंचकूला में होगा। आगामी एक घंटे में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, भाजपा अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली सहित अन्य शीर्ष नेताओं की मौजूदगी में हवन पूजन के साथ कार्यालय का शुभारंभ होगा। भाजपा की राजनीति अब पंचकूला के पंचकमल से चलेगी। राम नवमी के दिन भाजपा अपने कार्यालय का शुभारंभ कर रही है। पंचकूला स्थित पंचकमल दफ्तर को मुख्यालय के तौर पर ही डिजाइन किया गया था। चंडीगढ़ के नजदीक होने के कारण पार्टी कार्यालय की उपयोगिता ज्यादा होगी। मुख्यमंत्री व अन्य मंत्रियों के लिए भी पंचकूला आना ज्यादा आसान होता है।

राजधानी में कारोबारी के घर से 1.26 करोड़ की लूट, बंधक बनाकर दिया घटना को अंजाम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

बिहार। बिहार की राजधानी में आज दिन-दहाड़े लुटेरों ने एक बड़ी घटना को अंजाम दिया है। हथियारबंद अपराधियों ने बंधक बनाकर लूट-पाट की है। राजधानी में बेखौफ अपराधियों ने दिनदहाड़े घर में घुसकर लूट की बड़ी घटना को अंजाम दिया है। मामला पटना के अगमकुंआ थाना क्षेत्र स्थित नालंदा कॉलोनी की है। घर मालिक संतोष प्रकाश का कहना है कि लगभग 1.26 करोड़ की लूट हुई है। पुलिस का कहना है कि घर के सदस्यों को हथियार के बल पर बंधक बनाकर लूटपाट की गई है।घटना के संबंध में पुलिस का कहना है कि दिन में लगभग 10:30 बजे अगमकुओं थाना क्षेत्र के धनुकी मोड़ स्थित नालंदा कॉलनी में रहने वाले स्व0 रामाकांत प्रसाद के पुत्र संतोष प्रकाश के घर में घुसकर 05 अज्ञात अपराधी घुस गए। घर में घुसते ही परिवार के सदस्यों को बंधक बनाकर घर में रखा लगभग 1.25 करोड़ का जेवर और नगद-1.25 लाख रूपया लूटकर घर से फरार हो गये। अपराधियों के जाते ही संतोष प्रकाश ने घटना की सूचना थाना को दी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और जांच में जुट गई। जांच के लिए तत्काल डॉग स्कावाईड और एफएसएल टीम भी घटनास्थल पर पहुंची। इस संबंध में संतोष प्रकाश ने अगमकुआँ, थाना में लिखित आवेदन दिया है, जिसके आधार पर थाना कांड सं0-290/25, के तहत मामला दर्ज किया गया है। बताया जा रहा है कि लूट की घटना मोटर पार्ट्स कारोबारी संतोष प्रकाश के घर में हुई है।अपराधियों के जाने के बाद पीड़ित ने अगमकुंआ थाना की पुलिस को घटना की सूचना दी जिसके बाद घटना स्थल पर पूर्वी एसपी डॉ के रामदास सहित अगमकुंआ थाना पुलिस और डॉग स्क्वायड की टीम पहुंच अपराधियों को चिन्हित करने में जुटी है।

पति ने सिर पर मारी चटनी कूटने वाली कुंडी, दीवार पर लिखा अब सूरज व सोनू की बारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। सूरज अपनी पत्नी पर किसी दूसरे व्यक्ति के साथ अफेयर का शक करता था। इसे लेकर दोनों के बीच कई बार झगड़ा हुआ। कुछ दिन पहले नेहा झगड़े के बाद बच्चों को साथ लेकर अपने मायके चली गई थी। नरवाना की

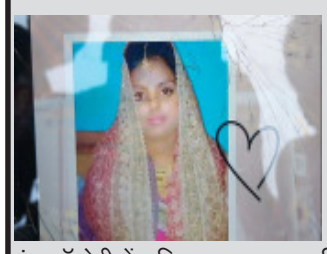

इंद्रा कॉलोनी में शनिवार सुबह एक पति ने अपनी पत्नी की चटनी कूटने वाली पत्थर की कुंडी सिर पर मार दी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वारदात के बाद आरोपी पति ने घर की दीवार पर चॉक से लिखा अब सूरज और सोनू की बारी है। इसके बाद वहां से फरार हो गया है। घटना की सूचना मिलते ही डीएसपी अमित भाटिया मौके पर पहुंचे और जांच शुरू की।जानकारी के अनुसार फतेहाबाद के भूना का रहने वाला सूरज और उसकी 28 वर्षीय पत्नी नेहा काफी समय से नरवाना की इंदिरा कॉलोनी में किराए पर रह रहे थे। सूरज राजमिस्त्री का काम करता है, जबकि नेहा प्राइवेट स्कूल में स्वीपर का कार्य कर रही थी। शनिवार सुबह दोनों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई। कहासुनी इतनी बढ़ गई कि सूरज ने चटनी कूटने वाली कुंडी उठाकर नेहा के सिर में दे मारी। इससे नेहा लहूलुहान होकर वहीं चारपाई पर गिर पड़ी। इसके बाद सूरज गुस्से में बाहर चला गया। नेहा की मौके पर ही मौत हो गई। सूरज अपनी पत्नी पर किसी दूसरे व्यक्ति के साथ अफेयर का शक करता था। इसे लेकर दोनों के बीच कई बार झगड़ा हुआ। कुछ दिन पहले नेहा झगड़े के बाद बच्चों को साथ लेकर अपने मायके चली गई थी। दो-तीन दिन बाद सूरज ने ससुरालियों से रिक्वेस्ट की और नेहा को वापस भेजने के लिए गिड़गिड़ाया। इसके बाद नेहा व बच्चों को घर ले आया था। शुक्रवार देर रात दोनों में फिर से झगड़ा हो गया। मृतका के फूफा ने बताया कि उन्हें सुबह सूचना मिली थी कि नेहा की मौत हो गई है। उसने मौके पर पहुंच कर देखा तो नेहा का शव चारपाई पर पड़ा हुआ था। इसके बाद नेहा की बेटी से पूछा तो उसने बताया कि पापा ने मम्मी के सिर में पत्थर की कुंडी मारी है। कई बार वार किए, जिससे उसके सिर से खून निकल आया था। फूफा ने नेहा के किसी भी तरह के अफेयर को नकार दिया। मायके वालों ने कहा कि वह कल शाम को ही नेहा को यहां छोड़कर गए थे। कुछ दिन पहले सूरज और नेहा के बीच झगड़ा हुआ था। इस कारण नेहा मायके चली गई थी। सूरज और नेहा के 4 बच्चे हैं, जिनमें तीन लड़कियां और एक लड़का है।

वाटर पार्क में रोलर कोस्टर टूटने से युवती की मौत, फन एंड फूड विलेज पर लापरवाही का आरोप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। प्रियंका के परिवार वाले और मंगेतर ने फन एंड फूड विलेज पर लापरवाही का आरोप लगाया है। कापसहेड़ा थाना पुलिस ने मंगेतर की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है। कापसहेड़ा इलाके में बृहस्पतिवार शाम फन एंड फूड विलेज वाटर पार्क में रोलर कोस्टर (झूला) का स्टैंड टूटने से एक युवती की मौत हो गई। मृतका की शिनाख्त प्रियंका के रूप में हुई है। वह अपने मंगेतर निखिल के साथ घूमने गई थी। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। प्रियंका के परिवार वाले और मंगेतर ने फन एंड फूड विलेज पर लापरवाही का आरोप लगाया है। कापसहेड़ा थाना पुलिस ने मंगेतर की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है।प्रियंका परिवार के साथ चाणक्यपुरी स्थित सर्वेंट क्वॉर्टर में रहती थी। परिवार में पिता ज्योति रावत, मां अनिता, बड़ी बहन गीतांजलि और एक भाई मोहित है। प्रियंका इंश्योरेंस कंपनी में काम करती थी, जबकि पिता एक आईपीएस अधिकारी के यहां कुक हैं। बृहस्पतिवार देर रात पुलिस को अस्पताल में एक युवती की मौत होने की सूचना मिली। जांच में पता चला कि युवती

कापसहेड़ा स्थित फन एंड फूड विलेज में लगे झूले से गिरकर घायल हो गई थी। पुलिस ने युवती के शव को कब्जे में लिया। युवती के शरीर पर चोट के निशान थे। उसके बाद पुलिस ने क्राइम और फोरेंसिक टीम को घटनास्थल पर बुलाया। टीम ने वहां से साक्ष्य जुटाए। जिला पुलिस उपायुक्त सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि मामले की छानबीन की जा रही है। हादसे का शिकार हुई प्रियंका के मंगेतर निखिल ने वाटर पार्क वालों पर लापरवाही का आरोप लगाया है। आरोप है कि वाटर पार्क में सुरक्षा इंतजाम नहीं थे। निखिल ने बताया कि वह परिवार के साथ नजफगढ़ स्थित श्याम विहार फेज-1 में रहता है। वह साइप्रस देश में कुक है। वह आठ मार्च को साइप्रस से भारत आया था। दिल्ली आने के बाद वह मंगेतर प्रियंका से मिलने आया। उनकी फरवरी 2026 में शादी होने वाली थी। शनिवार को उसकी वापसी की फ्लाइट थी। बृहस्पतिवार को दोनों वाटर पार्क पहुंचे। शाम करीब छह बजे वह दोनों रोलर कोस्टर पर राइड के लिए पहुंचे। राइड के दौरान दोनों आसपास बैठे थे। झूले के ऊपर जाने के दौरान उसने आंखें बंद कर ली। निखिल के अनुसार, झूले में बैठे 15 सेकेंड ही हुए थे, तभी उसे शोर सुनाई दिया कि लड़की गिर गई है। जब उसने आंखें खोली तो देखा प्रियंका नीचे गिरी थी। उसके बाद प्रियंका को वाटर पार्क के कर्मचारी एम्बुलेंस से अस्पताल ले गए। बाद में मणिपाल अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने प्रियंका को मृत घोषित कर दिया। निखिल का आरोप है कि वाटर पार्क में सुरक्षा इंतजाम नहीं थे। प्रियंका के गिरने के बाद उसे देरी से अस्पताल पहुंचाया गया, जिससे उसकी मौत हुई।

गृहमंत्री का घाटी में तीन दिवसीय दौरा जम्मू में शार्प शूटर तैनात; ये है कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। गृहमंत्री के दौरे से पहले ही हाई अलर्ट कर दिया गया है। वहीं एलओसी पर सुरक्षा चाक-चौबंद कर दी गई है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आज तीन दिवसीय दौरे पर जम्मू पहुंचेंगे। शाह

के दौरे को लेकर लखनपुर से श्रीनगर तक हाई अलर्ट किया गया है। अंतरराष्ट्रीय सीमा और एलओसी पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। आतंकी संगठनों ने हमेशा शाह के दौरे से पहले खलल डालने का प्रयास किया है। जहां तक कि पीएम दौरे से पहले भी घुसपैठ कराने के प्रयास किए गए हैं।अमित शाह रविवार को जम्मू में भाजपा विधायकों और वरिष्ठ नेताओं के साथ रामनवमी मनाएंगे। सोमवार को कठुआ के हीरानगर बॉर्डर पर जाएंगे। यहां अग्रिम चौकियों पर बीएसएफ जवानों से मुलाकात करेंगे। इसके बाद राजभवन जम्मू में कठुआ के हीरानगर में आतंकियों से मुठभेड़ में बलिदान पुलिस कर्मियों के परिवारों से मुलाकात करेंगे। दोपहर बाद श्रीनगर रवाना होंगे। जहां यूनिफाइड कमांड और अमरनाथ यात्रा की सुरक्षा को लेकर तैयारियों पर बैठक करेंगे। आठ अप्रैल को सुबह जम्मू-कश्मीर के विकास से संबंधित बैठक होगी।शाह के दौरे को लेकर शनिवार को पुलिस अफसरों ने बैठक कर सुरक्षा तैयारियों की समीक्षा की। पुलिस ने जम्मू एयरपोर्ट से लेकर त्रिकुटा नगर भाजपा मुख्यालय और राजभवन समेत कई अन्य जगहों पर विशेष सुरक्षा कर्मी तैनात किए हैं। महत्वपूर्ण जगहों पर शॉर्प शूटर नजर रख रहे हैं। ड्रोन से भी निगरानी होगी। बताया जा रहा है कि तमाम बड़ी सुरक्षा एजेंसियों के प्रमुख रविवार सुबह जम्मू पहुंच जाएंगे, ताकि सुरक्षा बंदोबस्त को पुख्ता किया जा सके। वहीं, पुलिस विभाग के सभी विंग अपने स्तर पर रिपोर्ट भी तैयार कर रहे हैं। क्योंकि, शाह किसी भी विंग को लेकर बात कर सकते हैं।

पाकिस्तान की जनता में अविश्वास चरम पर, पीओके को मिलाना केंद्र सरकार का काम', बोले एलजी सिन्हा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने पीओके को मिलाने का फैसला भारत सरकार पर छोड़ दिया, पाकिस्तान की अंदरूनी स्थिति पर चिंता जताई और जम्मू कश्मीर में शांति, विकास और आतंकवाद पर नियंत्रण की दिशा में विश्वास व्यक्त किया उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि पाकिस्तान की जनता में अविश्वास का माहौल अपने चरम पर है। रही बात पीओके कि तो उसे देश में मिलाने का फैसला भारत सरकार को करना है। उपराज्यपाल ने एक चैनल को दिए साक्षात्कार में शुक्रवार को ये बातें कहीं। तबादलों पर मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की तरफ से प्रतिक्रिया को लेकर कहा कि जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों को सोच समझकर बोलना चाहिए।उपराज्यपाल ने कहा कि पाकिस्तान की जनता में अविश्वास का माहौल बना हुआ है। दूसरी तरफ यहां पीओके है, वहां पर जनता जब हमको देखती है तो कहती है कि जो हिस्सा मोदी के पास है वहां पर सड़कें हैं, अस्पताल हैं और डाक्टर हैं। जबकि यहां हमारे यहां गेहूं व आटे के लिए

लाइन लग रही है। उपराज्यपाल ने कहा कि पाकिस्तान एक विफल राज्य है। पाकिस्तान कई समस्याओं चाहे बलूच का हो या पड़ोस का मसला हो, इससे जूझ रहा है। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने अपने बयान में कहा कि कटड़ा से श्रीनगर वंदेभारत रेल सेवा का शुभारंभ संभवतः अप्रैल के तीसरे सप्ताह में 19 या 20 अप्रैल तक होने की संभावना है। इसमें कोई संशय नहीं है। उन्होंने जम्मू कश्मीर को लेकर कहा कि यहां पर शांति है इसके लिए किसी के सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है। आम आदमी यहां शांति महसूस कर रहा है। जो लोग देश के अन्य भागों से यहां कश्मीर आ रहे हैं, उन्हें मैं ब्रांड एंबेस्डर मानता हूं। इसीलिए कश्मीर में आने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है। पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग को लेकर बयान मे उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि पूर्व में भी प्रधानमंत्री व गृहमंत्री इसको लेकर स्पष्ट कर चुके हैं कि सही समय आने पर पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा। विधानसभा चुनाव के दौरान जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कश्मीर आए थे तब भी यही बात उन्होंने कही थी। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं होना चाहिए। लोगों को इंतजार करना चाहिए। जम्मू कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों को लेकर उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि जब वह सात अगस्त 2019 को यहां आए थे, तब से लेकर अब तक काफी कुछ बदल चुका है। यहां पर शांति,समृद्धि व विकास की बात हो रही है। आतंकवादी तंजीमों का अब तो कोई कमांडर नहीं बचा है।

शादी की राह में रुकावट था पौने दो साल का मासूम, कलयुगी मां ने गला दबाकर की हत्या

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। दूसरी जगह शादी करने के लिए एक मां ने अपने ही पौने दो

साल के बच्चे की जान ले ली। मामला बांसवाड़ा के आंबापुरा थाना क्षेत्र का है। पुलिस ने सूचना मिलते ही 24 घंटे के भीतर कार्रवाई कर आरोपी को जेल भेज दिया है। जिले के आंबापुरा थाना क्षेत्र में एक कलयुगी मां ने अपने पौने दो साल के बेटे की मुंह, नाक व गला दबाकर हत्या कर दी। आरोपी मां दूसरा विवाह करना चाहती थी और उसकी संतान इसमें आड़े आ रही थी। पुलिस ने आरोपी मां को 24 घंटे में गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाला ने बताया कि 4 अप्रैल को दिलीप पुत्र लक्ष्मणलाल पारगी निवासी सुरवानिया, ग्राम पंचायत महेशपुरा ने थाना आंबापुरा में रिपोर्ट दी। इसमें बताया कि करीब तीन साल पहले उसने आशा पुत्री दिनेश निनामा निवासी छापरिया से नातरा विवाह किया था। उसके एक बेटा आयुष है, जो करीब पौने दो वर्ष का था।

बॉलीवुड/टेली मसाला

अनुपम खेर से कौन सी चीज सीखना चाहते हैं सिकंदर साझा किया रॉबर्ट डी नीरो से जुड़ा किस्सा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। सिकंदर खेर ने हाल ही में एक पॉडकास्ट में अपने सौतेले पिता अनुपम खेर से जुड़ा दिलचस्प किस्सा साझा किया है। इसके साथ

ही उन्होंने इस बातचीत में बताया है कि वह उनके कौन सी चीज सीखना चाहते हैं।अभिनेता सिकंदर खेर ने अपने सौतेले पिता अनुपम खेर के बारे में दिलचस्प बातें बताई हैं। एक बातचीत में उन्होंने उनसे सीखे जीवन के सबक साझा किए। सिकंदर ने कहा कि अनुपम ने उन्हें हार न मानने की ताकत सिखाई। सिकंदर ने एक पुरानी घटना का जिक्र किया, जब अनुपम ने हॉलीवुड फिल्म 'द सिल्वर लाइनिंग्स प्लेबुक' में अपनी जगह बचाने के लिए रॉबर्ट डी नीरो और ब्रैडली कूपर जैसे बड़े सितारों के सामने अपनी बात रखी। फिल्म में जेनिफर लॉरेंस मुख्य भूमिका में थी। डेविड ओ रसेल ने इसे निर्देशित किया था।'किस्से विद कोपल' पॉडकास्ट में सिकंदर ने कहा, ठजो इंसान पहले से भीगा हुआ है, उसे बारिश का डर नहीं होता। यह बात मैंने उनसे सीखी। उनकी जिद और हिम्मत कमाल की है। जब उन्हें पता चला कि फिल्म 'सारांश' से उन्हें बिना बताए हटा दिया गया था, तब उनके पास मुंबई में रुकने के लिए पैसे भी नहीं थे। फिर भी जाने से पहले उन्होंने महेश भट्ट को अपनी बात सुनाने का फैसला किया। उन्होंने इतने जोरदार तरीके से अपनी बात रखी कि उन्हें वह रोल मिल गया।सिकंदर ने कहा कि अनुपम के पसंदीदा अभिनेता रॉबर्ट डी नीरो 'सिल्वर लाइनिंग्स प्लेबुक' में उनके साथ काम कर रहे थे। एक रिहर्सल के दौरान डी नीरो को लगा कि अनुपम का किरदार उस सीन में नहीं होना चाहिए। सिकंदर ने साझा किया, ठडी नीरो को लगता था कि उनका किरदार मेरे पिता के किरदार को घर में नहीं आने देगा, क्योंकि उसे वह पसंद नहीं था। लेकिन मेरे पिता ने हार नहीं मानी। उन्होंने पूरे सेट और जेनिफर लॉरेंस, ब्रैडली कूपर, क्रिस टकर और रॉबर्ट डी नीरो जैसे सितारे के सामने डायरेक्टर से अपनी बात कही। इस दौरान उन्होंने बताया कि उनका किरदार उस सीन में क्यों जरूरी है। इसके बाद डायरेक्टर ने डी नीरो से पूछा,और डी नीरो ने हामी भर दी। सिकंदर ने कहा कि मेरे पिता वहां कोई बड़े नाम नहीं थे। वह भारत से आए एक आम अभिनेता थे। मेरे पिता वह रोल खो सकते थे, लेकिन उन्होंने अपनी आत्म-सम्मान की रक्षा की। यही वो चीज है जो मुझे सीखनी है।हाल ही में सिकंदर ने फिल्मों में वापसी की है। उन्होंने 'मोनिका ओ माय डार्लिंग' और 'मंकी मैन' में सहायक भूमिकाएं निभाई हैं। इसके अलावा वह कुछ समय पहले वेब सीरीज 'आर्या' और 'सिटाडेलः हनी बनी' में भी नजर आए थे।

मनोज कुमार की अंतिम विदाई के बाद भावुक हुए धर्मेंद्र, कहा- मेरे यार तेरे साथ बीता हर पल याद आएगा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। दिग्गज अभिनेता मनोज कुमार को अंतिम विदाई देने के बाद अभिनेता धर्मेंद्र भावुक हो उठे। उन्होंने शनिवार को एक पुरानी तस्वीर शेयर करते हुए एक भावनात्मक संदेश लिखा।दिग्गज अभिनेता मनोज कुमार के निधन के बाद पूरा देश शोक में डूबा हुआ है। फिल्म इंडस्ट्री के लोग उन्हें याद कर रहे हैं। दिग्गज स्टार

धर्मेंद्र ने शनिवार को उनके साथ पुरानी यादों को ताजा किया और दिवंगत मनोज कुमार के साथ एक पुरानी तस्वीर साझा की। थ्रोबैक तस्वीर में दोनों सितारे मुस्कुराते हुए दिखाई दे रहे हैं। अपने कैप्शन में धर्मेंद्र ने उल्लेख किया कि वह मनोज कुमार के साथ बिताए पलों को हमेशा याद रखेंगे। धर्मेंद्र ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक भावुक संदेश लिखा। उन्होंने अपनी पोस्ट के कैप्शन में मनोज कुमार को याद करते हुए लिखा, मनोज, मेरे यार तेरे साथ बीता हर पल बहुत याद आएगा। मनोज कुमार के निधन की जानकारी मिलने के बाद धर्मेंद्र उनके आवास पर भी गए थे।मनोज कुमार का शनिवार को मुंबई के पवन हंस श्मशान घाट पर राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। अंतिम संस्कार में अमिताभ बच्चन, अभिषेक बच्चन, सलीम खान और अरबाज खान सहित बॉलीवुड की प्रमुख हस्तियां शामिल हुईं। दिग्गज अभिनेता और फिल्म निर्माता का लंबी बीमारी के बाद 4 अप्रैल को सुबह 4:03 बजे मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में निधन हो गया। उनके निधन ने पूरी इंडस्ट्री को शोक में डाल दिया। अभिनेता ने भारतीय सिनेमा में अतुलनीय योगदान दिया है। दिवंगत अभिनेता को देशभक्ति फिल्मों जैसे 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम' और 'शहीद' में उनकी भूमिकाओं के लिए जाना जाता था। अभिनय के अलावा उन्होंने एक निर्देशक और निर्माता के रूप में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

चट्टान की तरह खड़ी है छावा, सिकंदर का बुरा हाल, एल 2 एम्पुरान का भी नहीं दिखा कमाल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। बॉक्स ऑफिस पर इन दिनों कई फिल्में प्रदर्शित हो रही हैं। इनमें 'छावा', 'एल 2 एम्पुरान' और 'सिकंदर' की चर्चा सबसे ज्यादा है। आइए जानते हैं कि शनिवार को तीनों फिल्मों ने कैसा प्रदर्शन किया।फिल्म 'छावा' की

शानदार सफलता के बाद दर्शकों को उम्मीद थी कि 'सिकंदर' और 'एल 2 एम्पुरान' जैसी बड़ी फिल्में टिकट खिड़की पर धमाल मचाएंगी। हालांकि, दोनों ही फिल्में रिलीज के बाद दर्शकों का दिल जीतने में नाकाम रही हैं। सलमान खान की 'सिकंदर' और मोहनलाल की 'एल 2 एम्पुरान' को लेकर रिलीज से पहले खूब चर्चा थी, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इनका प्रदर्शन उम्मीदों से कोसों दूर रहा। शनिवार यानी 5 अप्रैल 2025 के आंकड़े भी इस बात की तस्दीक करते हैं। आइए जानते हैं कि दोनों फिल्मों का प्रदर्शन अब तक कैसा रहा। ईद के मौके पर 30 मार्च 2025 को रिलीज हुई 'सिकंदर' से सलमान खान के फैंस को बड़ी उम्मीदें थीं। फिल्म ने पहले दिन 26 करोड़ रुपये की ठीक-ठाक ओपनिंग की, लेकिन यह सलमान की स्टार पावर के हिसाब से कम मानी गई। दूसरे दिन ईद की छुट्टी के बावजूद फिल्म ने सिर्फ 29 करोड़ रुपये कमाए, जिसके बाद दो दिनों का कुल कलेक्शन 55 करोड़ रुपये रहा। तीसरे दिन से फिल्म की कमाई में तेज गिरावट दे… यह 19.5 करोड़ … गई। चौथे दिन न… और पांचवें दिन … की कमाई के बाद … और धीमी हो ग… छठे दिन फिल्म ने … 75 लाख रुपये … 'सिकंदर' का कु… करोड़ रुपये हो … 200 करोड़ रुपये के बजट में बनी 'सिकंदर' अपने खर्च के मुकाबले बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास नहीं कर पाई। वीकडेज में कमाई की सुस्त चाल को देखते हुए कई सिनेमाघरों ने इसके शो घटा दिए हैं। कुछ जगहों पर तो इसे हटाकर दूसरी फिल्में जैसे 'एल 2 एम्पुरान' या क्षेत्रीय फिल्में लगाई जा रही हैं। 27 मार्च 2025 को रिलीज हुई मोहनलाल की 'एल 2 एम्पुरान' ने पहले दिन 21 करोड़ रुपये की ओपनिंग के साथ शुरुआत की। विदेशी बाजारों में फिल्म को अच्छा रिस्पॉन्स मिला, लेकिन भारतीय दर्शकों ने इसे खास पसंद नहीं किया। दूसरे दिन से ही इसकी कमाई में कमी देखी गई। पहले हफ्ते में फिल्म ने 88.25 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया। नौवें दिन यानी शुक्रवार को यह सिर्फ तीन करोड़ रुपये ही कमा सकी। शनिवार को फिल्म ने थोड़ा सुधार दिखाया और तीन करोड़ 50 लाख रुपये की कमाई की। इसके साथ ही इसका कुल कलेक्शन अब 94.65 करोड़ रुपये हो गया है। मीडिया रिपोट्र्स के अनुसार, 'एल 2 एम्पुरान' को 180 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया था। हालांकि, फिल्म का घरेलू कलेक्शन अपने बजट से काफी पीछे है। 'एल 2 एम्पुरान' का निर्देशन …न ने किया है। … इसमें अहम … है। फिल्म में …जीत सुकुमारन, …मन्यु सिंह और …से कई कलाकार … बॉक्स ऑफिस …पारी जारी रखे …ो 5 अप्रैल 2025 …लाख रुपये की कमाई की। इसके साथ ही 'छावा' का कुल कलेक्शन अब 597.15 करोड़ रुपये हो गया है। रिलीज के सात हफ्तों बाद भी फिल्म दर्शकों के बीच अपनी पकड़ बनाए हुए है और लगातार बेहतरीन प्रदर्शन कर रही है।

जब अमिताभ बच्चन ने शख्स की कर दी थी पिटाई, रेखा से जुड़ा है मामला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अमिताभ बच्चन और रेखा के कई किस्से बहुत मशहूर हैं। ऐसे में आज हम आपको उस किस्से के बारे में बताएंगे जिसमें अमिताभ ने रेखा के लिए एक शख्स की पिटाई कर दी थी।सदी

के महानायक अमिताभ बच्चन की अदाकारी का हर कोई कायल है। अमिताभ बच्चन ने रेखा के साथ कई फिल्मों में काम किया। इस जोड़ी को लोगों ने बड़े पर्दे पर खूब सराहा। इनकी कई फिल्में हिट रहीं। असल जिंदगी में अमिताभ बच्चन और रेखा रिश्ते में रहे। आज हम आपको इन्हीं से जुड़ा एक किस्सा बताएंगे। कई मीडिया रिपोट्र्स में दावा किया जाता है कि अमिताभ बच्चन और रेखा एक दूसरे से प्यार करते थे। दोनों एक दूसरे का खूब ख्याल भी रखते थे। एक बार तो अमिताभ बच्चन ने रेखा के लिए एक शख्स की पिटाई तक कर दी थी। यह मामला काफी सुर्खियों में रहा था। यह किस्सा यासीर उस्मान की किताब 'रेखा की जीवनी- द अनटोल्ड स्टोरी' से लिया गया है। साल 1978 में फिल्म 'गंगा की सौगंध' की शूटिंग राजस्थान के जयपुर में हो रही थी। शूटिंग देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ी थी। शूटिंग के दौरान एक शख्स ने रेखा पर गलत बयानबाजी कर दी। क्रू मेंबर ने शख्स को समझाया लेकिन वह नहीं माना। उसने दोबारा वही हरकत की।कई बार समझाने के बाद जब शख्स नहीं माना तो अमिताभ बच्चन को गुस्सा आ गया। इसके बाद अमिताभ बच्चन ने उस शख्स की पिटाई कर दी।

'गुड बैड अग्ली' के ट्रेलर ने मचाया धमाल, बना डाला ये बड़ा रिकॉर्ड

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। गुड बैड अग्ली' के ट्रेलर ने एक बड़ा कारनामा कर दिखाया है। व्यूज के मामले में इस ट्रेलर ने बड़ा रिकॉर्ड बनाया है। आइए इस बारे में विस्तार से जानते हैं।कॉलीवुड सुपरस्टार अजित की

बहुप्रतीक्षित फिल्म 'गुड बैड अग्ली' का ट्रेलर हाल ही में रिलीज हुआ है। फैंस के बीच इसकी जबर्दस्त चर्चा थी। उम्मीदों पर खरा उतरते हुए इस ट्रेलर ने धमाल मचा दिया और तमिल फिल्म इंडस्ट्री में एक नया रिकॉर्ड बना दिया। 'गुड बैड अग्ली' के ट्रेलर ने 24 घंटे के अंदर तीन करोड़ 20 लाख से ज्यादा व्यूज हासिल किए। इसी के साथ यह तमिल सिनेमा के इतिहास में पहले दिन सबसे ज्यादा देखा जाने वाला थिएट्रिकल ट्रेलर बन गया। इसने पहले दिन के टॉप पांच सबसे ज्यादा देखे गए तमिल ट्रेलरों को पीछे छोड़ दिया, जिनमें 'लियो' (तीन करोड़ 10 लाख), 'थुनिवु' (तीन करोड़ नौ लाख), 'बीस्ट' (दो करोड़ 70 लाख) और 'द गोट' (दो करोड़ 42 लाख) शामिल हैं। रिलीज के बाद से यह ट्रेलर यूट्यूब पर छाया हुआ है। इस फिल्म में अजित के साथ तृषा कृष्णन भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। 'गुड बैड अग्ली' का निर्देशन अधिक रविचंद्रन ने किया है। इसे मैत्री मूवी मेकर्स के बैनर तले बनाया गया है। फिल्म का संगीत जीवी प्रकाश कुमार ने तैयार किया है, जो इस बड़े बजट की एक्शन फिल्म को और धमाकेदार बनाने वाला है। यह फिल्म 10 अप्रैल को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।वर्क फ्रंट की बात करें तो इससे पहले अजित कुमार को 'विदामुयार्ची' नाम की फिल्म में देखा गया था। इस फिल्म में भी उनके साथ तृषा नजर आई थीं। हालांकि, यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी थी।

गुमनामी में कटे 36 साल, ठुकराया दादा साहब फाल्के; अमिताभ संग काम कर चुकी इस एक्ट्रेस की हैं नानी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। हिंदी और बंगाली फिल्मी दुनिया की जानी मानी

अभिनेत्री सुचित्रा सेन, जिन्होंने एक फिल्म फ्लॉप से चुन लिया था गुमनामी का रास्ता। 50 के दशक में अपनी अदाकारी से सबको मुरीद बना देने वाली अभिनेत्री ने आखिर क्यों ठुकराया था दादा साहब फाल्के पुरस्कार? आज के दिन ही अभिनेत्री का जन्म हुआ था। आइए जानते हैं इनके जन्मदिन पर कुछ खास बातें।भारतीय सिनेमा की लीजेंड एक्ट्रेस सुचित्रा सेन ने 'देवदास', 'आंधी' जैसी फिल्मों से सिनेमा जगत में एक अलग पहचान बनाई। अभिनेत्री अपने बेबाक अंदाज के लिए पहचानी जाती थीं। एक समय उन्होंने राज कपूर की फिल्मों को यह कहकर ठुकरा दिया था कि उनका अंदाज उन्हें पसंद नहीं आया। आखिर अभिनेत्री ने ऐसी कौन सी इच्छा जताई थी, जिससे सब हैरान रह गए थे। आज अभिनेत्री के जन्मदिन पर जानेंगे सभी सवालों के जवाब। सुचित्रा सेन का जन्म 6 अप्रैल 1931 को बंगाल के सिराजगंज में हुआ था, जो अब बांग्लादेश में आत है। उनका बचपन का नाम रोमादास गुप्ता था। अभिनेत्री अपने पांच भाई-बहनों में सबसे छोटी थीं। 1947 में भारत के आजाद होने के बाद भारत-पाकिस्तान में बंटवारे के लिए दंगे शुरू हो गए, जिस कारण से अभिनेत्री का परिवार जान बचाते हुए पश्चिम बंगाल में आकर बस गया। यहां आते ही सुचित्रा सेन के पिता ने उनकी शादी एक नामी बिजनेसमैन के बेटे दीबानाथ से करा दी। उनकी एक बेटी भी हुई मुन मुन सेन।रोमा को बचपन से गाने का शौक था, इस शौक को देख उनके पति ने उन्हें सिनेमा की दुनिया में जाने के लिए कहा। शुरुआत में उन्हें एक गाना ऑफर किया गया था, जिसमें उन्हें गाने का मौका नहीं मिला। फिर उस समय के मशहूर फिल्म निर्माता सुकुमार दासगुप्ता ने रोमादास गुप्ता का 'सात नंबर कैदी' फिल्म के लिए स्क्रीन टेस्ट कराया और वह टेस्ट में पास हो गई। इसके बाद निर्माता के असिस्टेंट नीतीश रॉय ने रोमा का नाम बदलकर सुचित्रा कर दिया था। फिर उन्होंने साल 1953 में तीन फिल्में साइन कीं, जिसमें एक थी 'काजोरी', जिसका निर्देशन निरेन लाहिड़ी ने किया था। वहीं दूसरी फिल्म थी 'सारे चतुर', जिसका निर्देशन निर्मल डे द्वारा किया गया था और फिल्म में हीरो के रूप में थे उत्तम कुमार। उत्तम कुमार के साथ यह फिल्म काफी चर्चित हुई, जिस कारण सुचित्रा सेन को बंगाली सिनेमा में मशहूर एक्ट्रेस में गिना जाने लगा। इसके अलावा अभिनेत्रा की तीसरी फिल्म थी 'भगवान श्री श्री कृष्ण चैतन्य', जिसका निर्देशन देबकी बोस ने किया था।सुचित्रा सेन और उत्तम कुमार की जोड़ी सिनेमा जगत की आईकॉनिक जोड़ी कही जाती थी। उत्तम कुमार बंगाली सिनेमा के महानायक कहे जाते थे। 1953 में दोनों पहली बार साथ में 'सारे चतुर' फिल्म में नजर आए थे, जिसने काफी सुर्खियां बटोरीं थीं। इसके बाद कई निर्माताओं ने इन दोनों पर करीब 20 साल तक कई फिल्में बनाई। अभिनेत्री ने अपने जीवन में कुल 61 फिल्में कीं, जिनमें 30 फिल्में उत्तम कुमार के साथ थी। बंगाली फिल्मों में प्रसिद्धि के बाद अभिनेत्री ने साल 1955 में बिमल रॉय के निर्देशन में बनी फिल्म 'देवदास' से हिंदी सिनेमा में डेब्यू किया। निर्देशक ने पहले फिल्म में पारो के किरदार के लिए मीना कुमारी को कास्ट किया था, लेकिन उनके पति ने इसकी इजाजत नहीं दी। इस वजह से बिमल रॉय ने सुचित्रा सेन को कास्ट किया और उनके एक्सप्रेशन ने फिल्मों में जान डाल दिया था। फिल्म में दिलीप कुमार मुख्य भूमिका में थे और वैजयंतीमाला ने चंद्रमुखी का रोल निभाया था। चंद्रमुखी के रोल के लिए वैजयंतीमाला को बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड मिला, लेकिन उन्होंने यह कहकर अवॉर्ड लेने से मना कर दिया कि उनका और सुचित्रा सेन का रोल फिल्म में बराबर था। सुचित्रा सेन ने कुल सात हिंदी फिल्मों में काम किया, जिसमें एक फिल्म 'आंधी' भी रही। इस फिल्म में उन्होंने भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का किरदार निभाया था, इस फिल्म के गाने 'तेरे बिना जिंदगी से' और 'तुम आ गए हो नूर आ गया है' बहुत प्रसिद्ध गाने रहे। सुचित्रा सेन का एक वाकया और है कि उस दौर के चर्चित अभिनेता राज कपूर की फिल्म में काम करने से अभिनेत्री ने सिर्फ यह कहकर मना कर दिया था कि उन्हें उनका अंदाज पंसद नहीं था।

स्त्री' के निर्देशक ने श्रद्धा कपूर को लेकर कही ऐसी बात, फैंस का फूटा गुस्सा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली।स्त्री 2' के निर्देशक अमर कौशिक का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में उन्होंने श्रद्धा कपूर को

लेकर ऐसी बात कह दी कि श्रद्धा के फैंस उनकी जमकर आलोचना कर रहे हैं।'स्त्री 2' के निर्देशक अमर कौशिक का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में श्रद्धा कपूर की फिल्म में कास्टिंग के बारे में बात करते हुए नजर आ रहे हैं। वह बातचीत के दौरान यह कहते हुए सुने जा सकते हैं कि दिनेश विजान ने उनसे कहा कि श्रद्धा चुड़ैल की तरह हंसती हैं। वायरल वीडियो में अमर कौशिक कोमल नाहटा के साथ बातचीत करते हुए नजर आ रहे हैं। इस दौरान श्रद्धा की कास्टिंग को लेकर उन्होंने कहा, 'श्रद्धा की कास्टिंग का क्रेडिट पूरी तरह से दिनेश विजान को जाता है। वो श्रद्धा के साथ किसी फ्लाइट में आए थे और फ्लाइट में वो उनको मिली थी। उन्होंने मुझसे कहा, अमर वह एक स्त्री की तरह हंसती है। वह एक चुड़ैल की तरह हंसती हैं, सॉरी श्रद्धा। शायद उन्होंने ऐसा कुछ कहा, मुझे याद नहीं है कि उन्होंने चुड़ैल कहा या कुछ और? इसलिए, जब मैं श्रद्धा से मिला, तो मैंने उनसे पहले हंसने के लिए कहा।' वीडियो के सोशल मीडिया पर आते ही श्रद्धा के फैंस ने अपनी नाराजगी जतानी शुरू कर दी। वह अमर कौशिक के ऐसा कहने से नाराज नजर आएं। फैंस ने आलोचना करते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी। निर्माता की आलोचना करते हुए एक प्रशंसक ने लिखा, ङ्गपहले अपार, अब वह! क्या यह कोई नया चलन है जहां उनकी अपनी फिल्मों के पुरुष सार्वजनिक रूप से उनका अपमान कर रहे हैं? आप अपनी लीड एक्ट्रेस के बारे में इस तरह बात करते हैं? पहले उन्होंने उनके नाम पर फिल्म का प्रमोशन किया, इसके बाद बकवास कर रहे हैं! श्रद्धा बेहतर टीम के सदस्यों की हकदार हैं!' एक अन्य यूजर ने लिखा, 'चाहे आप श्रद्धा के प्रशंसक हों या नहीं, लेकिन एक निर्देशक के रूप में सार्वजनिक मंच पर अपनी लीड एक्ट्रेस के बारे में बात करना बेहद घिनौना और अपमानजनक है, शर्म की बात है।एक और प्रशंसक ने पोस्ट किया,'इसके उन्हें सच में 'स्त्री 3' नहीं करनी चाहिए या उनकी हॉरर फ्रेंचाइजी में किसी भी कैमियो का हिस्सा नहीं बनना चाहिए। यह बहुत अपमानजनक है, भले ही आप उनके प्रशंसक हों या नहीं, लेकिन एक महिला के लिए ऐसी असंवेदनशील टिप्पणी करना घटिया है।'इस बीच, श्रद्धा के फैंस 'स्त्री' फ्रेंचाइजी की तीसरी किस्त का इंतजार कर रहे हैं। मैडॉक फिल्म्स ने घोषणा की है कि 'स्त्री 3' 13 अगस्त 2027 को रिलीज होगी।

स्वात्वाधिसकसार एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सस्पादक/प्रकाशक डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0-09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com
नोट- इस समाचार पत्र मे प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हंतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।